❀ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ❀

❀ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ❀

रसिकराज राजेश्वर श्रीमद्धरिव्यासदेवाचार्यजी विरचित

श्रीमहावाणी

का

❀ सेवा-सुख ❀
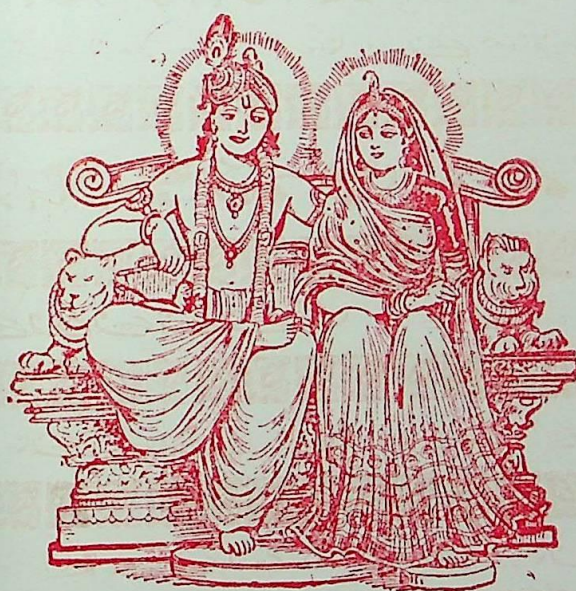
प्रकाशक :

श्री "श्रीजी" की बड़ी कुञ्ज

रेतिया बाजार, वृन्दावन

❀ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ❀
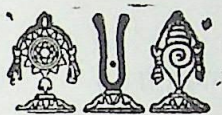
❀ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ❀

अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्री श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी

प्रणीत

श्री महावाणी का

* सेवा - सुख *

सम्पादक :

जयकिशोरशरण

श्री "श्रीजी" मन्दिर, वृन्दावन (मथुरा)

प्रेरक :
अनन्तश्री विभूषित ज. गु. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर
श्री "श्रीजी" महाराज
अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) किशनगढ़ (राज.)

प्रकाशक :
श्रीसर्वेश्वर कार्यालय
श्री 'श्रीजी' मन्दिर
प्रताप बाजार, वृन्दावन

प्रकाशन तिथि :
अक्षय नवमी
वि. सं. २०६५, सन् २००८

न्यौछावर :
२५ रु० मात्र

मुद्रक :
श्रीराम बेरीवाला
श्रीसर्वेश्वर प्रेस, वृन्दावन
☎ 2443152

* पुरोवाक् *

श्रीराधासर्वेश्वरजू की अहेतुकी कृपा से जीवों के कल्याणार्थ स्वयं श्रीरंगदेवीजू ने श्रीनिम्बार्क भगवान् के रूप में अवतरित होकर सर्वप्रथम इहलोक में निकुञ्जवर्ति-रसोपासना का निरूपण स्वप्रणीत वेदान्तकामधेनु' (दशश्लोकी), 'प्रातः स्ववराज', 'श्रीराधाष्टक स्तोत्र' आदि ग्रन्थों में सूत्रात्मक रूप से किया है। तत्पश्चात् इस निकुञ्ज-भाव-रस-सरिता को मध्यवर्ती कतिपय आचार्यचरणों ने परिस्थितिवश अपने-आप तक ही सीमित रखा और प्रकट किया भी तो अधिकारी साधकों के लिए सो अल्प मात्रा में। चौदहवीं सदी के प्रारम्भ में जब करुणानिधि श्रीनित्य-किशोरीजू की करुणा उमड़ी, तब निज सहचरी श्रीहितू रसिक प्रवर श्री श्रीभट्टदेवाचार्य रूप में यहाँ प्रकट हुई। उन्होंने आदिवाणी 'श्रीयुगल-शतक' के माध्यम से उस भाव-रस-सरिता को पुनः प्रवाहित किया। इस अपूर्व रसधारा ने रसिक राजराजेश्वर श्रीमद् हरिव्यास देव प्रणीत 'श्रीमहावाणी' के रूप में अगाध रस-सिन्धु का रूप धारण कर लिया, जिससे अनेक रस-सरिताएँ प्रकट हुईं, जो आद्यावधि जीव-जगत् को कृतार्थ करती आ रही हैं।

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य ने वेदान्त-कामधेनु में श्रीयुगलोपासकों के लिये अर्थपंचक का दिग्दर्शन कराते हुए कहा है—

उपास्यरूपं तदुपासकस्य च कृपाफलं भक्ति रसस्ततः परम।
विरोधिनोरूपमथैतदाप्ते ज्ञेया इमेऽर्था अपिपञ्चसाधुभिः ॥

उपासकों को चाहिए कि उपर्युक्त इन पाँचों वस्तुओं को अवश्य जाने—उपास्यरूप नित्य-निकुञ्जविहारी श्रीराधाकृष्ण के दिव्य स्वरूप का परिज्ञान, फिर उपास्यदेव के उपासक (जीवात्मा) सखीस्वरूप को जाने और उपास्यस्वरूप के कृपा-फल को जानकर उपास्य के प्रति की जाने वाली रसभक्ति के स्वरूप को भी जाने। अन्त में इन सबकी प्राप्ति में बाधक अर्थात् विरोधी के स्वरूप को अवश्य जाने, ताकि उससे बचा जा सके।

इसी अर्थपंचक के स्वरूप का रहस्यात्मक दर्शन ललित-गायन-शैली में दिव्य प्रेमार्णवस्वरूप श्रीमहावाणी के महादिव्य पंचरत्नों अर्थात् पांच सुखों में बड़ी विलक्षणता से कराया है। श्रीमहावाणी के 'सेवा-सुख' में उपासक के स्वरूप के उन्मुक-गायन के अतिरिक्त सखियों के अनुपम स्वरूप की झाँकी तथा उनकी सेवा परिचर्या का वर्णन अन्यतम है। इस सुख में तो सखियों की प्रधानता है ही, अन्य सुखों में भी सखियों के बिना नित्य-विहार का कोई अस्तित्व नहीं है। श्रीयुगल के नित्य-विहार की विधात्री एवं उसकी

आद्याचार्या निज परिकर की ये सखियाँ ही हैं। जहाँ अंग-संगिनी अन्तरंगिनी, समीपवर्तिनी आदि अष्ट सखियाँ और उनके परिकर नहीं, वहाँ नित्य-विहार की कल्पना भी भला कैसे की जा सकती है ?

उपास्य श्रीश्यामा-श्याम के रसस्वरूप को प्रकाशित करने वाला मन्त्र एवं उनको रसमयी-सेवा प्राप्तार्थ सर्वप्रथम रसिकजनों को सैवा तत्पश्चात् अनन्यरसिक गुरुदेव की कृपा से श्रीमहावाणी के सिद्धान्तसुख में वर्णित योगपीठ 'आकृतिस्वरूप श्रीवृन्दावन' को हृदयंगम कर निज-कुन्ज में सखी-भाव से प्रवेश करे---

प्रात काल ही ऊठि कें, धारि सखी कौ भाव ।
जाय मिलै निज रूपसों, याकौ यहै उपाव ।।

साधक सखी-स्वरूप से प्रातःकाल उठकर वनराज की शोभा निरखते हुए **'सखी नाम रत्नावलि स्तव'** का गान करे। उसके उपरान्त (सिद्धान्त सुख पद १२ अनुसार) स्नान, शृंगारादि से सुसज्जित होकर श्रीगुरू-रूपाजू की सेवा करके श्रीहरिप्रिया, श्रीहितू एवं श्रीयूथेश्वरीजू की सेवा करे। फिर उनके साथ मोहनमहल के आलिन्द में प्रवेश करे। इसके बाद निशान्त-सुरतान्त के पदों के गायन द्वारा प्रियालालजू को जगाये। तदुपरान्त मंगला, स्नान, शृंगार, कुन्ज-कुन्ज में उत्सवों का विलास, राजभोग के उपरान्त मध्याह्न-कालीन शयन, अपराह्न-उत्थापन वनविहार (वन में ऋतु-अनुसार उत्सवों का विलास) फिर संध्या-आरती, रहस्य-कुन्ज-केलि, ब्यारू, चौसर एवं शयन की सेवा करते हुए शयन की लीला में रहस्यरास और रहस्यब्याह की सैवा सम्पादन कर सखीजन अपनी-अपनी कुन्जों में आकर शयन करती हैं। इसी का नाम **'सेवा-सुख'** है।

इहि बिधि सेवा सुख समै, मंगल सैन प्रज्यंत ।
ध्यावै सो पावै सदा, परम तंत को तंत ।।

इस प्रकार जो मंगला से शयन-पर्यन्त अष्टकालीन सेवा सुख-सम्पत्ति का चिन्तन करते हुए सेवा-रत रहेंगे, वे तत्त्व के तत्त्व. सिद्धान्त के सिद्धान्त, सार के सार, सुख रूप के रूप श्रीराधामाधवजू की चिरकालीन सेवा निश्चय ही प्राप्त करेंगे।

अष्टकाल सेवाजु सुख, अहल महल की बात ।
कछु अलभि ताहि न रहे, साधहिं सो साछात ।।

यद्यपि सेवा-सुख-प्राप्त करना जीव के लिए अति दुर्लभ है, क्योंकि यह परम दिव्य मोहन-महल के अन्तराल की वार्ता है, जिसे श्रीमद्हरिव्यासदेव जू जैसे परमहंस वंशाचार्य-रसिक - चक्र - चूड़ामणिरसिकरासेश्वर ही जामते हैं। इन्हीं आचार्यवर्य के कृपा-प्रसाद से जो साधक इस अष्ट - कालीन सेवा - सुख का निरन्तर सेवन करेंगे, उन्हें यह वस्तु अवश्य-अवश्य प्राप्त होगी।

वर्जना एवं अधिकार—

श्रीमहावाणी जी के प्रति जो श्रद्धाहीन, श्रीहरि-चरणों से बहिर्मुख एवं नास्तिक विचारों वाला हो उसके समक्ष यह रसपूरित-महाजस कदापि न तो कहे और न ही सुने। जिसका मन-मधुकर श्रीप्रिया-लाल के चरणारविन्दों का लोभी हो, श्रीवृन्दावन का अखण्ड वासी हो, रसिक जनों द्वारा सखी-भाव-प्राप्त हो, वही रसोपासना का उत्तम अधिकारी होता है ! अन्य सभी प्राणी अनाधिकारी हैं। (यथा-से० सु० फलस्पुति)

प्रस्तुत सेवा-सुख में प्राचीनतम कई हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर एवं पूर्व में प्रकाशित संस्करणों का मिलान कर कहीं-कहीं पाठान्तर किया गया हैं। इसमें महावाणी के अनन्योपासक रसिकजनों तथा विद्वज्जनों के परामर्श एवं उनकी पूर्ण सहमति से ही उपयुक्त भाषा-समावेश, अर्थ-संगति, मात्रानुसार छन्दगति, काव्य-भाषा एवं तत्सम् शब्दावली आदि का ध्यान रखते हुए यह नवीनतम शोध संस्करण तैयार हो सका है। भावुकतावश पूर्व के लिपिकारों द्वारा महावाणी के सेवा-सुख में कई अनावश्यक शब्दों का समावेश कर दिया गया था, जिससे छन्द की गति अवरुद्ध हो गई थी। अतः ऐसे शब्दों को कोष्टक में रखा गया है।

महामंगलमय रहस्यमय यह सेवा-सुख श्रीयुगल-सेवा-पारायण महाभागी रसिक सन्त-भक्तों का परमधन है। भजनमय जीवन के प्रत्येक पल-घड़ी-पहरकी चरम चरितार्थता जैसी सेवा-सुख के अष्टकालीन अनुष्ठानमें है वैसे अन्य सेवा-पद्धतिमें नहीं। परन्तु श्रीप्रिया-प्रीतम की मधुरतम सेवा के सुख को भली प्रकार वे जन जानते और आस्वादन करते हैं जिनके एकमात्र अवलम्ब नित्य निकुञ्जविहारी श्रीराधाकृष्ण हैं, जो अहर्निश श्रीयुगल के रसमय सुयश गान में निरत रहते हैं, जो मधुअमृत अर्थात् सरस नित्यविहार रसपान के अतिरिक्त अन्य रस के आभास से भी दूर हैं—

करौ मो रसना यहि रसपान।
लाड़िली लालन को मधुअमृत, या बिन अचौं न आन ।।
याही छक में छके रहौ दृग, अहो निसा उनमान।
मुदित रहौं नित "श्रीहरिप्रिया" कौ गाय गाय गुनगान ।।

(श्रीमहावाणी स॰ सु॰ ३६)

श्रीयुगलचरणरजाकांक्षी—
जयकिशोरशरण

❀ दोहा ❀

अग्रवर्ति इहि अवसरहिं, आइं धरि वर वेस ।
ओर निवाहू संग मिलि, चलहु चलैं निज देस ।।

❀ पद ❀

चलहु चलहु चलियें निज देस, जहाँ रंग रँगीले जुग नरेस ।
दिव्य कनकमय अवनि अखंडित, मनिमंडित तहाँ करैं प्रवेस ।।
करुनानिधि श्रीनित्यकिसोरी, करि कनुकंप कियो आदेस ।
आइं अग्रवर्ति अलवेली, धरि बर इच्छा विग्रह वेस ।।
ऐसो अवसर बहुरि न ऐहै, ओर निबाहू संग सुदेस ।
नेम प्रेम तें परे पंथ तहाँ, तुरत पहुँचि हैं अलि अकलेस ।।
मंजनादि नवसत अभरन तन, सजियें मनरंजन सुभ वेस ।
विविध सुगंधनि अँग अंगनि में, करहु अलंकृत कुसुम सुकेस ।।
सब जन भये अनकूल अयन के, भय न रह्यौ अब तनकहु सेस ।
सकुन समागम अगम जनावत, प्रतिकूलन के गये लवलेस ।।
सुफल फली मन रली सबनि की, जागें निज निज भाग बिसेस ।
हिलिमिलि हुलसि हियें हरषहु अहु, निरखहु श्रीहरिप्रिया परेस ।।
(श्रीमहावाणी सि. सुख १२)

❀ दोहा ❀

विधि निषेध आदिक जिते, कर्म - धर्म तजि तास ।
प्रभु कैं आश्रय आवहीं, सो कहिये निज दास ।।

❀ पद ❀

जो कोउ प्रभु कें आश्रय आवैं । सो अन्याश्रय सब छिटकावैं ।।
विधि - निषेध कें जे जे धर्म । तिनिकों त्यागि रहें निष्कर्म ।।
झूठ क्रोध निंदा तजि देंहीं । बिन प्रसाद मुख और न लेंहीं ।।
सब जीवनि पर करुना राखैं । कबहुँ कठोर बचननहिं भाखैं ।।
मन माधुर्य - रस माहि समोवैं । धरी पहर पल वृथा न खोवैं ।।
सतगुरु के मारग पगु - धारैं । हरि सतगुरु बिचि भेद न पारैं ।।
ए द्वादस - लच्छिन अवगाहैं । जे जन परा परम - पद चाहैं ।।
जाकें दस पैड़ी अति दृढि हैं । बिन अधिकार कौन तहाँ चढि हैं ।।
पहले रसिक जनन कों सेवैं । दूजी दया हिये धरि लेवैं ।।
तीजी धर्म सुनिष्ठा गुनि हैं । चौथी कथा अतृप्त ह्वै सुनि हैं ।।
पंचम पद पंकज अनुरागैं । षष्टी रूप अधिकता पागैं ।।
सप्तमि प्रेम हिये विरधावैं । अष्टमि रूप ध्यान गुन गावैं ।।
नवमी दृढ़ता निश्चैं गहिवैं । दसमी रसकी सरिता बहिवैं ।।
या अनुक्रम करि जे अनुसरहीं । सनै - सनै जगतें निरबरहीं ।।
परमधाम परिकर मधि बसहीं । श्रीहरिप्रिया हितू सँग लसहीं ।।
(श्रीमहावाणी सि. सुख ३१)

❀ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ❀

❀ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ❀

❀ श्रीमहावाणी ❀

अथ—पद विलास-निकुंज-रहस्य-श्रीमहादिव्य-राजराजेश्वर-प्रवर परमहंसवंशाचार्य श्रीमद्‌हरिव्यासदेवाचार्यजू कृत श्रीमहावाणी पञ्चरत्न सेवा-सुख लिख्यते ॥

—. तत्र :—

सखीरूपाचार्य-नाम-रत्नावली स्तवः

—❀ श्लोकाः ❀—

नमस्तस्मै भगवते कृष्णायाकुण्ठमेधसे ।
राधाऽधरसुधासिन्धौ नमो नित्यविहारिणे ॥१॥

राधां कृष्णस्वरूपां वै कृष्णं राधास्वरूपिणम् ।
कलात्मानं निकुञ्जस्थं गुरुरूपं सदा भजे ॥२॥

हरिणीं हारिणीं ह्रीणां, हरितां चतुरक्रियाम् ।
कौमारीं सततं वन्दे, तप्तचामीकरप्रभाम् ॥३॥

मुग्धां स्निग्धां विदग्धाञ्चासन्दिग्धां चतुरक्रियाम् ।
वन्देऽरुणिक्रिया-भासां[1] देवर्षिप्रमुखाकृतिम्[2] ॥४॥

शिञ्जन्नूपुरपादपद्मयुगलां हंसींगतिं बिभ्रतीम् ।
चञ्चत्खञ्जनमञ्जुलोचनयुगां पीनोल्लसत्कन्धराम् ॥
शुम्भत्काञ्चनकङ्कणद्युतिमिलत्पाणौचलच्चामरम् ।
कुर्वाणां हरिराधिकोपरि सदा श्रीरङ्गदेवीं भजे ॥५॥

पा० १—कृपाभासां, २—प्रमुदाकृतिम् ।

नव्यां नूतनचीरधारणपरां नीलप्रभाद्योतिताम् ।
नीलेन्दीवरदीर्घसुन्दरदृशा नीलं निरीक्षद्वनम् ।।
वृन्दारण्यनिकुञ्जवासमुदितां राजीवनेत्रं हरिम् ।
ध्यायन्तीं धरणिस्थिरेण मनसा श्रीनव्यवासां भजे ।।६।।

वचनेऽमृतसागरायतीं गमने मत्तसुरद्विपायतीम् ।
हृमनेऽमलमौक्तिकायतीं सततं श्रीसखि-विश्वभां भजे ।।७।।

उत्तमाङ्गपरिरक्षणस्थिरामुत्तरोत्तररसप्रदायिनीम् ।
स्वामिनीप्रणयपूरनिर्भरामुत्तमां च शिरसाऽभिवादये ।।८।।

निजदासविलासदायिनीं निजनाथैकगुणौघगायिनीम् ।
वयसा नयनेन्दुहायिनीं सुविलासां शिरसा नतोऽस्म्यम् ।।९।।

रससागरपारधोरणीं रसरूपामृतचन्द्रतोरणीम् ।
सरसस्मितहास्यवादिनीं सरसां रासकरीं भजामहे ।।१०।।

मधुरां मधुरप्रभाषिणीं हरिराधारतिरङ्गसाक्षिणीम् ।
शशिकोटिविकाशसुस्मितां प्रणमामि प्रणतात्मनि स्थिताम् ।।११।।
भवतापहरां भयापहां भवपाथोधितरीं दयापराम् ।
दलिताम्बुजनेत्रशालिनीमतिभद्रां मनसा स्मरे मुदा ।।१२।।
निजवर्गमधुव्रतावलीढं कमनीयाङ्गुलिपल्लवप्ररूढम् ।
स्वजनामलमानसप्रसूतं प्रियपद्मापदङ्कजं स्मरामि ।।१३।।
श्यामां श्यामवयोन्वितां परिलसन्नीलाम्बरं विभ्रतीम् ।
आकर्णायतनेत्रपङ्कजभरै–रालस्यमातन्वतीम् ।।
लीलालोलमनङ्गरङ्गमधुर—व्यापारभारावहाम्
राधाकृष्ण-मुखारविन्दमतुलं संचिन्तयन्तीं भजे ।।१४।।
वीणा–वादनतार–तान–मधुरत्वाविष्करित्रीं मुदा ।
श्रीवृन्दावनचन्द्र–कृष्णविलसत्पादाम्बुज ध्यायिनीम् ।।
राधाहारविलासभारकुशलां कुन्देन्दुभासामुखीं ।
इच्छाशक्तिरतां हरेः प्रियतरां श्रीशारदां संभजे ।।१५।।
करेणोत्तरीयं हसन्तीं दधानां द्वितीयेन फुल्लारविन्दं वहन्तीम् ।
लसत्पीनवक्षोजसत्पुष्पहारां सदा संस्मरेऽहं कृपालामुदाराम् ।।१६।।

रणच्चारुपादाम्बुजन्यासजिद्–गजेन्द्रामुरोमौक्तिकस्फारहारां ।
सुधामाधुरीहारिमन्दस्मितास्यां भजे देवदेवीं सुरप्रार्थ्यदास्याम् ।।१७।।
स्फुरत्सुन्दरोदारमन्दारहार–स्तनद्वन्द्वभारावसीदत्सुमध्याम् ।
लसद्धस्तविन्यस्तताम्बूलपात्रां भजे सुन्दरीं सुन्दराकारछत्राम् ।।१८।।
पादारविन्दं शिथिलं दधाना पद्मालया पद्मपरागरञ्जिता ।
पद्माननना पद्मकुचाभिरामा नमामि तस्याः पदपङ्कजं सदा ।।१९।।
अनाप्नुवंस्तन्मुखचन्द्रमस्द्रमस्तुलां विधुर्गतः खं त्रपयाब्जराजः ।
जलेऽपतन्नाप्तमुखाम्बुजश्री स्तामिन्दिरां चेतसि भावयामि ।।२०।।
कामाङ्गनाकोटिमनोज्ञरूपां मुखप्रभानिर्जितरात्रिभूपाम् ।
स्वीयप्रियास्नेहनिधानकूपां रामां स्मरे कृष्णमनोऽनुरूपाम् ।।२१।।
प्रावृट्प्रफुल्लनवचारुकदम्बपुष्पहारा मुखद्युतिविनिर्जितचन्द्रतारा ।
कान्ताङ्गसङ्गजनिताङ्कनिदर्शनायवामाकरोदभिलसन्मुकुरं स्वसख्याः ।।
कृष्णामहमभिवन्दे युगलपदांभोज-भावनामुदितां ।
कृष्णरसायनतृप्तां साक्षादिव सिन्धुजां क्लृप्ताम् ।।२३।।
यमुनातीरनिकुञ्जे मधुकरपुञ्जे विनिद्रतरुवृन्दे ।
पद्मामहमभिवन्दे रटन्तीं कृष्णेति कृष्णेति ।।२४।।
अयुतायुतेन्दुरूपां सकलसखिमालिकानूपाम् ।
वन्देऽहं श्रुतिरूपां कोटिस्मरकान्ति-सारूप्याम् ।।२५।।
मदनमोहनमोहनसुन्दर–स्मितविलासकलासुकुतूहलाम् ।
प्रमुदितेन हृदा त्वभिवादये मनसि भागवतीं भगवत्प्रियाम् ।।२६।।
वसन्तकालोदयपुष्पितानि द्विसंध्यरागायितपङ्कजानि ।
प्रियप्रियाचारुपदाम्बुजेषु प्रीत्यार्पयन्तीं प्रणमामि माधवीम् ।।२७।।
यच्छोभाभरजलधौ विधिमुखविबुधालयं ययुः सुचिरम् ।
असितायाश्च तदास्यं शारदविधुमण्डलाकृति ध्याये ।।२८।।
शृङ्गारभारं विविधं विधाय प्रातः स्थिताया निजदेवतायाः ।
मुखारविन्दैकनिरीक्षणाय गुणाकरी दर्पणमाचकार ।।२९।।
द्विजराजकलाविराजमानां मुखशोभाजितफुल्लकञ्जलक्ष्मीं ।
मृगराजकटिं मृगायताक्षीमहमीडे सततं सुवल्लभाख्याम् ।।३०।।

शारदीयविधुबिम्बमुखाभां कुन्दपंक्तिरदनश्रियमेकाम् ।
तुङ्गपीनकुचभारविनम्रामानतोऽस्मि शशिगौरतराङ्गीम् ।।३१।।

मयूरपिच्छद्यु तिहारिचामरप्रभा-तिरस्कारिनिजप्रियायाः ।
संगुम्फयंतींविलसत्कराभ्यां धम्मिल्लभारंप्रणमामि केशीम् ।।३२।।

जगत्पवित्रं कुरुते हि यस्या दृगन्तपातो वितनोति सौख्यम् ।
श्रीस्वामिनीस्नेहनिधानभूतांश्रीकृष्णमित्रां प्रभजे पवित्राम् ।।३३।।

काश्मीरपङ्काङ्कितहृत्सरोजां संभावितश्रीपतिपत्सरोजाम् ।
विनिद्र-रक्तोत्पललोचनाभां मुदा स्मरे चेतसि कुमकुमाभाम् ।।३४।।

समस्तनानाविधदेवतागणैर्विरञ्चिगङ्गाधरशारदादिभिः ।
मूर्द्धाभिवंद्यारुणपादपद्मां श्रीश्रीहितां संततमानतोऽस्मि ।।३५।।

विलोहितप्रांतविशाललोचनां मुखप्रभापूर्णनिशाकरोपमाम् ।
सच्चामरालंकृतहस्तपङ्कजां श्रीरङ्गदेवीं मनसा स्मरामि ताम् ।।३६।।

❀ इति श्रीपरम्परास्तवः ❀

अथ श्रीपदविलास निकुञ्जरहस्य श्रीमहादिव्यराजराजेश्वर-प्रवर परम-हंसवंशाचार्य श्रीहरिव्यासदेवजू कृत श्रीमहावाणी सेवा-सुख लिख्यते ।

❀ दोहा ❀

जै-जै श्रीहितु सहचरी, भरी प्रेम रस रंग ।
प्यारी प्रीतम के सदा, रहति जु अनुदिन संग ॥१॥
अष्टकाल बरनन करूँ, तिनकी कृपा मनाय ।
महावाणी सेवा जु सुख, अनुक्रम तै दरशाय ॥२॥
सखी नाम रत्नावली, स्तोत्र पाठ तहँ कीज ।
पुनि गुरु सखिन कृपा जु लहि, युगल सेव चित दीज ॥३॥
प्रात काल ही ऊठि कैं, धारि सखी कौ भाव ।
जाय मिलै निज रूप सौं, याकौ यहै उपाव ॥४॥
मोहन मन्दिर चौक में, मिलि सब सखी समाज ।
बीन बजावहिं गावहीं, मधुर-मधुर सुर साज ॥५॥

❀ अनुरागिनि शुभरवा मध्याभास ❀

❀ दोहा ❀

जै मृगनैंनी राधिके, रंग रँगीली बाल ।
गोरी कंचन बेलि ज्यौं, लपटी स्याम तमाल ॥

❀ पद ❀

जयति जयति भामिनी रँगीली राधिके ।
बल्लभा बिहारीजू की गुन अगाधिके ॥
लपटि रही लाल जू कें ललित अंग सोहनी ।
तरु तमाल कनक बेलि छबि विमोहनी ॥
कामिनी कुरंग नैंनी कोकिल कल बैनी ।
कला कोटि कोविदे सलौनी सुख दैंनी ॥

सहज ही सुहाग भरी गरबीली गोरी ।
जीवनि धन हितू की श्री हरिप्रिया किसोरी ॥१॥

❀ दोहा ❀

रसिक बिहारी लाल की, जीवनि प्रान अधारि ।
रसिक रसीली रस भरी, अलबेली सुकुमारि ॥

❀ पद ❀

रसिक रसीली राधा रस ही सों भरी है ।
रसिक बिहारी जू कि जीवनि की जरी है ॥
अलबेली जू में ऐसी अधिकता है कोई ।
पीवत ही पीवत लाल तृपति न होई ॥
सनी है सुहाग भाग प्रेम रगमगी है ।
प्रीतम पियारे संग सब निसि जगी है ॥
कौन - कौन अंग की अनुपता जु कहिये ।
(श्री) हरिप्रिया दासी होय सदा संग रहिये ॥२॥

❀ दोहा ❀

सब निसि बीती खेल में, तउ उर अधिक उमंग ।
ऐसे नवलकिसोर वर, हियरैं बसौ अभंग ॥

❀ पद ❀

खेले नव लाल खेल नवल बाल संग ।
वीती सब निसा तोउ अधिक उर[1] उमंग ॥
पल पल में बढ़ें चौप सहज सुरति रंग ।
उपजत अति चाव हाव भाव भृकुटि भंग ॥
नव किसोर साँवरौ किसोरी गोरी अंग ।
श्री हरिप्रिया हियें बसौ अविचल अभंग ॥३॥

पाठा०—१ हैं

❀ दोहा ❀

बोलत सी आ नाह यों, मधुर-मधुर मृदुबाल ।
सुख आसन राजैं ललित, रलित रंग सँग लाल ॥

❀ पद ❀

लाल संग रंग रलित ललित बाल ललकें ।
सुरत रंग के तरंग अंग-अंग झलकें ॥
ससिमुखी ससिकांति आह-नाह मधुर बलकें ।
गोरे गंड दसन खंड कामिनि कल-कलकें[1] ॥
बैठे हैं सुखासन पिय छाजैं छबि छलकें ।
उर बिसाल अति रसाल मोति माल रलकें ॥
अरुन वरन चरन बर बिबंसन ढर ढलकें ।
(श्री) हरिप्रिया देखत जहाँ लागत नहिं पलकें ॥४॥

❀ अनुरागिनि दिव्यगंधा मध्याभास ❀

❀ दोहा ❀

प्रिया वदन सुखमा सदन, रह्यौ प्रेम परिपूरि[2] ।
जा मधि प्रीतम प्रान की, सरबस जीवन मूरि ॥

❀ पद ❀

प्रिया सुख सुखमा कौ आगार ।
जा मधि लाड़ लड़े कौ सरबस अंग-अनँग उद्गार ॥
जीवनि प्रान-प्रान-जीवनि की अधर सुधा सुख सार ।
पीवत परम तृषातुर पल-पल बाढ़त प्रेम अपार ॥
रंग रँगीले रदन वदन में सोहत सुखद सुढार ।
हँसत जबै कछु लसत लुनाई ललित मनोहर मार ॥

---

१ पा०–कुल कुलकैं, २—भरिपूरि

गोरे गंड अरुनता तिन बिच अद्भुत अमल उदार ।
मनु संपुट मधि लै अनुरागहिं भरि राख्यौ भरतार ॥
स्यामल बिंदु चिबुक श्रुति भूषन, नासा बेसरि चार ।
बड़ड़े नैंन सअंजन खंजन गंजन गरव पहार ॥
बरनी जात न बरुनी भौंहैं सोहैं आड़ ललार ।
सीस फूल सीमंत चन्द्रिका चिकुर चतुर चित हार ॥
गुही स्याम मखतूल पीठि पर बैंनी विरह विदार ।
निज कर रची नबल नव नायक सुन्दर वर सुकुँवार ॥
दुख दरनी हिय हरनि स्यामा सकल सुखनि विस्तार ।
निरखि हरखि श्रीहरिप्रिया सहचरि बलि-बलि बाम्बार ॥५॥

❀ दोहा ❀

श्रमबन कन तन बनि रहे, गहे लाड़ गम्भीर ।
बिहरत सेज बिहार विवि, सुरत समर रनधीर ॥

❀ पद ❀

कुवर दोउ सुरत समर रनधीर ।
मध्य सेज बिहार बिहरत रही सुधि न सरीर ॥
स्वेद बन कन गन मगन मन धनी धन बिनु चीर ।
उमँग अँग-अँग अनंग रंग सों रहे रँगि वर वीर ॥
वदन विधु बर विसद सुन्दर स्रवत अमृत सीर ।
तृषित पीवत तृपति होत न क्योंहूँ अमित अधीर ॥
महालालचि लाड़िले छबि भरे गहर गँभीर ।
हितू श्रीहरिप्रिया हरखत निरखि निपटहि नीर ॥६॥

❀ ❀ ❀

❀ अनुरागिनि रत्नकला मध्याभास ❀

❀ दोहा ❀

मनचीते कारज भये, रन जीते जुगलाल ।
उरझि रहे अँग अंग यों, कंचन बेलि तमाल ॥

❀ पद ❀

रंग रँगीले छैल छबीले । राजत दोऊ रसिक रसीले ॥
रति रन जीति जोरि जुगराज । किये सकल मन वाँछित काज ॥
सजे सगबगे सहज सिंगार । रस रगमगे जगमगे अपार ॥
मनु उरझी तरु कंचन बेली । यों सोहें (श्री)हरिप्रिया सहेली ॥७॥

❀ दोहा ❀

लाल भामते जीयके, लसौ बसौ हिय धाम ।
स्यामा सहज सनेहिनी, सहज सनेही स्याम ॥

❀ पद ❀

सहज सनेही स्यामा स्याम । मोहे कोटि - कोटि रति काम ॥
अंग - अंग आभा अभिराम । लाड़ लड़ीले जागे जाम ॥
लाल भामतौ(श्री)राधा भाम । बिलसौ(श्री)हरिप्रियाहिय धाम ॥८॥

❀ दोहा ❀

प्यारी जीवनि प्यारे की, प्यारौ प्यारी प्रान ।
रंग महल में बिलसही, दोऊ एक समान ॥

❀ पद ❀

प्यारी जू प्यारे की जीवनि प्यारौ प्यारी प्रान अधार ।
प्यारी प्यारे कें उरमाला प्यारौ प्यारी कें उरहार ॥
प्यारी प्यारे रंगमहल में रंग भरे दोउ करत बिहार ।
रंग भरी निरखत हरखत हिये श्रीहरिप्रिया सकल सुख सार ॥९॥

❀ अनुरागिनि विश्वाभा मध्याभास ❀

❀ दोहा ❀

कुंज भवन में करत दोउ, सुरत रंग रति केलि ।
उरझि रहे सुरझत नहीं, तन - तन मन - मन मेलि ॥

❀ पद ❀

नित नव कुंज भवन में केलि ।
करत हैं दम्पति सुख संपति अति रसिक रसिकनी रति-रस रेलि ॥
उरझि रहे सुरझत नहिं क्योंहूँ दोउ जन तन-तन मन-मन मेलि ।
तृपित न होत तृषातुर चितवत हितु जहाँ श्रीहरिप्रिया सहेलि ॥१०॥

❀ दोहा ❀

सुरत रंग के रंग में, रहे रंगि अँग अंग ।
अद्भुत आजु विराजहीं, प्यारी प्रीतम संग ॥

❀ पद ❀

रँगे दोउ सुरति रंग के रंग ।
रंग रँगीले आजु विराजत प्यारी प्रीतम संग ॥
सोहत भूषन बसन रंगमय सिथिल भये सब अंग ।
हितू सखि श्रीहरिप्रिया विलोकति उर में अधिक उमंग ॥११॥

❀ दोहा ❀

अंग-अंग बस ह्वै रहे, जद्दपि स्याम सुजान ।
तद्दपि पीवत प्यार सों, अधर सुधा रस पान ॥

❀ पद ❀

प्रीतम प्यार सों पीवत अधर सुधा रस ।
अलबेली के मुख अंबुज सों लगे चसन चस ॥
भोइ रहे प्यारीजू के रंगहि होइ रहे अँग अंग बस ।
अति उदार श्रीहरिप्रिया स्वामिनि प्रगट करति जस ॥१२॥

❀ दोहा ❀

आरस तजिये जाउँ बलि, लगी भुरहरी हौन ।
त्यों-त्यों पौढ़त तानि पट, बानि परी यह कौन ॥

❀ पद ❀

परी बलि कौन अनौखी बांनि ।
ज्यों-ज्यों भोर होत है त्यों-त्यों पौढ़त हौ पट तांनि ॥
आरस तजहु अरुनई उदई, गई निसा रति मांनि ।
श्रीहरिप्रिया प्रान धन जीवनि सकल सुखनि की खांनि ॥१३॥

❀ दोहा ❀

सुनि सहचरि के बचन प्रिय, उठी सुरति सुख लूटि ।
सँभरि सेज तें सुभट ज्यों, विजयी होय बधूटि ॥

❀ पद ❀

ललन सँग सोय उठी सुख लूटि ।
सुरति समर में सुभट लाड़ लड़ि सरबस लीनौं घूँटि ॥
सिथिल कंचुकी उभय कुचन पर रहि कच आवलि छूटि ।
श्रीहरिप्रिया स्वामिनी स्यामहि सुबस किये जुध जूटि ॥१४॥

❀ दोहा ❀

सब निसि लूटि सुरत सुख, प्रान प्रिया हरि संग ।
भाग सुहाग सची रची, रसिक रवन के रंग ॥

❀ पद ❀

राची रसिक रवन के रंग ।
श्रीराधा रवनी रसरूपा अमित अनूपा अंग ॥
भाग सुहाग भरी भिरि भामिनि उर अनुराग अभंग ।
सारी रैन सुरत सुख लूटी प्रान प्रिया हरि संग ॥१५॥

श्रीनवरँग बिहारिणीभ्यो नमः

❀ दोहा ❀

जै नव रंग बिहारिनी, नव-बासा सुख कारि ।
जै श्री हरिप्रिया स्वामिनी, श्रीराधा सुकुँवारि ॥

❀ स्तोत्र ❀

जय जय श्रीनवरंग बिहारिनि । जय जय नवबासा सुख कारिनि ॥१॥
जय जय श्री नवकेलि परायनि । जय जय विश्वानन्द विधायनि ॥२॥
जय जय श्री वृन्दावन रानी । जय जय परमोत्तम सुख दानी ॥३॥
जय जय श्रीमुख अद्भुत सोभा । जय जय निज विलास रस गोभा ॥४॥
जय जय श्री प्रीतम की प्यारी । जय जय सरस सरूप उज्यारी ॥५॥
जय जय श्री राधा गुन गोरी । जय जय मधुरा मधु रस बोरी ॥६॥
जय जय श्रीअति अमित अनूपा । जय जय सहज सुभद्र सरूपा ॥७॥
जय जय श्रीमोहन मनहारी । जय जय पद्मा प्रान अधारी ॥८॥
जय जय श्रीअहलादिनि देवी । जय जय स्यामा सब सुख सेवी ॥९॥
जय जय श्री पिय-बल्लभ राधा । जय जय सारद सब सुख साधा ॥१०
जय जय श्री नव नित्य नवीना । जय जय परम कृपाल प्रवीना ॥११
जय जय श्री सब सुख की धामा । जय जय देव देविका नामा ॥१२
जय जय श्री लावनिता देसा । जय जय सुन्दरि सरस सुवेसा ॥१३
जय जय श्री कलकोकिल बैनी । जय जय पद्मा हरि सुख दैनी ॥१४
जय जय श्री गुन रूप गँभीरा । जय जय इन्दिरा[1] हर हीरा ॥१५
जय जय श्री छबि कोटि छबीली । जय जय रामा हिये बसीली ॥१६
जय जय श्री आनँद अभिरामा । जय जय वामा सब सुख धामा ॥१७
जय जय श्री मोहन मन हरनी । जय जय कृष्ण प्रिया सुख करनी ॥१८
जज जय श्री रँग रूप रसाली । जय जय पद्माभा प्रति-पाली ॥१९

---

१. पाठान्तर— ऐंदिरा हर हीरा ।

जय जय श्री रस बरषा करनी। जय जय श्रुतिरूपा श्रुति बरनी॥२०॥
जय जय श्री परिपूरन कामा। जय जय भागवती भवि भावा॥२१॥
जय जय श्री ससि कोटि प्रकासी। जय जय माधवि हिये निवासी॥२२॥
जय जय श्रीवृन्दावन बसिता। जय जय असित सिता रसरसिता॥२३॥
जय जय श्री जस जग विख्याता। जय जय गुन आकरि सुख दाता॥२४॥
जय जय श्री महा प्रेम प्रसिद्धा। जय जय बिसद बल्लभा रिद्धा॥२५॥
जय जय श्री गुन गन आगारा। जय जय गौरांगी आधारा॥२६॥
जय जय श्री कंचन दिवि अंगी। जय जय कुँवरि सुकेसि सुरंगी॥२७॥
जय जय श्री छबि चित्र विचित्रा। जय जय पावन करन पवित्रा॥२८॥
जय जय श्रीअलि अलक लड़ैती। जय जय कुमकुम कला बड़ैती॥२९॥
जय जय श्री नव नित्य नवेली। जय जय सुखदा हितू सहेली॥३०॥
जय जय श्रीराधा निज नामिनि। जयजय श्रीहरिप्रिय जय स्वामिनि॥३१॥

❀ श्रीकिशोरी किशोराभ्यां नमः ❀

❀ दोहा ❀

नित्य किसोरि किसोर दोउ, नित्य कामिनी कंत।
नित बिलास बिलसत दोउ, नित नव भाव अनंत॥

❀ स्तोत्र ❀

जय श्रीराधा नित्य किसोरी रसिक बिहारी नित्य किसोर।
जय श्रीराधा पिय चित चोरी प्रीतम प्रान प्रिया चित चोर॥१॥
जय श्रीराधा राजति गोरी गुन मंदिर वर सुन्दर स्याम।
जय श्रीराधा रसिकिनि जोरी रसिक रसीलो सब सुख धाम॥२॥
जय श्रीराधा रूप अगाधा मन मोहन सोभा नहिं पार।
जय श्रीराधा हरनी बाधा बाधा हर हरि प्रान अधार॥३॥
जय श्रीराधा अति सुकुँवारी अति अद्भुत प्यारो सुकुँवार।
जय श्रीराधा पिय की प्यारी प्यारी को पिय परम उदार॥४॥

जय श्रीराधा कृष्णबल्लभा राधाबल्लभ कृष्ण कृपाल ।
जय श्रीराधा कृपा सुल्लभा दयानिधे हरि दीन दयाल ॥५॥
जय श्रीराधा नैंन विसाला कृष्ण कमल दल नैंन बिसाल ।
जय श्रीराधा रूप रसाला रंग रँगीलो रूप रसाल ॥६॥
जय श्रीराधा परम प्रवीना चित सुख चातुर परम प्रवीन ।
जय श्रीराधा नित्य नवीना नीरज नन सु नित्य नवीन ॥७॥
जय श्रीराधा रति रस रगी कृष्ण कोटि कंदर्प सुरंग ।
जय श्रीराधा मनि कनकांगी मरकत मनि मोहन मृदु अंग ॥८॥
जय श्रीराधा रवनी कबनी रहसि रवन रस जोरि विचित्र ।
जय श्रीराधा दुख दव दवनी दुख दव दवन प्रवीन पवित्र ॥९॥
जय श्रीराधा वारिज बदनी वारिज वदन वृन्दावन चंद ।
जय श्रीराधा सब सुख सदनी सब सुख सदन सदानँद कंद ॥१०॥
जय श्रीराधा लावनि ललिता लावन ललित लाड़िलौ लाल ।
जय श्रीराधा सब सुख सलिता सब सुख सलित सदा सब काल ।११।
जय श्रीराधा सहज सरूपा सकल सिरोमनि सहज सरूप ।
जय श्रीराधा अमित अनूपा अद्भुत आभा अमित अनूप ॥१२॥
जय श्रीराधा कंता कामिनी कंत कामिनी राधा कंत ।
जय श्रीराधा हरिप्रिया स्वामिनि बिलसत नव नव भाव अनंत ॥१३॥

❀ दोहा ❀

अलबेले आँगन खरे, अंस अंस भुज धारि ।
लै दरपन दिखरावहीं, ह्वै समुही सहचारि ॥

❀ पद ❀

अति अलबेले आँगन ठाढ़े ।
भुजा परस्पर अंसनि दीने, सुरति रंग में भीने गाढ़े ॥
पलटे पट आभूषन अंगनि, उर नख-रेखा अद्भुत सोहें ।

पीक कपोल अधर बर अंजन, हार बार उरझे मन मोहें ॥
आलस बलित अरुन दृग अंबुज, छैल छबीले रस में पागे ।
लै दरपन(श्री)हरिप्रिया सहचरि, ठाढ़ी जुगल कुँवरबर आगे ॥१८॥

❀ दोहा ❀

रति रस चिह्न सँवारहीं, सहचरि निज पट छोर ।
ज्यों ज्यों सकुचत जात हैं, नागर नवल किसोर ॥

❀ पद ❀

निसि के रतिरस चिह्नसँवारति, ज्योंज्यों सकुचत नवलकिसोर ।
रंगदेवी अति रंग रँगीली, लै पोंछति निज पट के छोर ॥
याही रस में मगन निरंतर, नहिं जानत कित रजनी भोर ।
सोभा निरखि हितू श्री हरिप्रिया, दंपति पर डारें तिन तोर ॥१९॥

❀ दोहा ❀

मुख सोधन मुख बसन करि, मंगल भोग अरोग ।
आरति हित बैठे दोउ, श्री हरिप्रिया सँयोग ॥

❀ पद ❀

मुख सोधन सुख कुंज सदन में, करत बिहारी बिहारिन दोऊ ।
अलबेली अनिमिष अँखियन सों, सुन्दर वदन निहारनि दोऊ ॥
करि मुख बसन असन मंगल, आरोगि अँचय जल झारनि दोऊ ।
श्रीहरिप्रिया बैठाय सिंघासन, सज आरति सहचारनि दोऊ ॥२०॥

❀ दोहा ❀

मंगल आरति बारहीं, मंगल रंग रंगीलि ।
मंगलमय मुख छबि निरखि, मंगल दृग उनमीलि ॥

❀ पद ❀

मंगल कुंज में मंगल आरति । मंगल रंग रँगीली वारति ।
मंगल मुख अरबिंद निहारति । मंगल मूरति हिय में धारति ॥

मंगल सब सहचरि अनुसारति। मंगल मोद बिबिधि बिस्तारति॥
मंगल चौंर लिये कर ढारति। मंगल मनसिज मन मनुहारति॥
मंगल जय जय सब्द उचारति। मंगल श्रीहरिप्रिये बिचारति॥२१॥

❀ अनुरागिनि विलासावलि मध्याभास ❀

❀ दोहा ❀

कमल नैंन बस कारिनी, नित्य किसोरी बाम।
सुजस उजागरि नागरी, जय राधा सुखधाम॥

❀ पद ❀

जय राधा जय सब सुख साधा जय जय कमल नैंन बस करनी।
जय स्यामा जय सब सुख धामा जय जय मनमोहन मन हरनी॥
जय गोरी जय नित्यकिसोरी जय जय भागिनि भरी सुभामिनि।
जयनागरि जय सुजस उजागरि जयजय श्रीहरिप्रिया जयस्वामिनि॥२२॥

❀ दोहा ❀

एक रंग में रँगे दोउ, एक प्रान द्वै गात।
बदन बिलोकत परस्पर, छिन बिछुरे न सुहात॥

❀ पद ❀

बदन बिलोकनि में न अघात।
पल न लगें पल रहे थकित ह्वै डगभरि चल्यौ न जात॥
दोउ दोउन के प्रान जीवनि - धन छिन बिछुरे न सुहात।
एक रंग रँगि रहे रँगीले एक प्रान द्वै गात॥
महा सुकुंवार किसोर किसोरी जोरी अति अवदात।
निरखति श्री हरिप्रिया सहचरी उर आनँद न समात॥२३॥

❀ दोहा ❀

नैंननि नैंन मिलावहीं, कहि कहि बैंन रसाल।
रसिकन के धन सहज दोउ, लाड़ लड़ीले लाल॥

❀ पद ❀

लाल दोउ लाड़ लड़ीले हो कहत परस्पर बैंन ।
सुनि सुनि पुनि पुनि रीझि रीझि नैंननि सों लावत नैंन ॥
अति अनुराग सुहाग भाग रस भीनें नागर नेह ।
कोटि कोटि रति अनँग अंग में झलकत रंग अछेह ॥
मन मोहन मन मोहनी सहजहिं स्यामल गौर ।
श्रीहरिप्रिया रसिक जन कौ धन जोरी जुगलकिसोर ॥२४॥

❀ दोहा ❀

ल्याई कुंज सनान में, निज सहचरि समुझाय ।
पहिराये पट पोंछि अंग, जथारीति अन्हवाय ॥

❀ पद ❀

निज सहचरि समुझाये दोऊ । न्हान कुंज में आये दोऊ ॥
मनि चौकी पधराये दोऊ । ऊबटना उबटाये दोऊ ॥
सरस सुगंध लगाये दोऊ । सौरभ नीर न्हवाये दोऊ ॥
मृदुल अंग अँगुछाये दोऊ । पाटंबर पहिराये दोऊ ॥
करन सिंगार सुहाये दोऊ । श्रीहरिप्रिया हुलसाये दोऊ ॥२५॥

❀ दोहा ❀

अंस भुजा दीनें दोऊ, भीने रंग अपार ।
करन सिंगार सुहाँवते, आये कुंज सिंगार ॥

❀ पद ❀

करन सिंगार सिंगार-कुंज में आये अलबेले दोउ प्यारे ।
चटक भरी चटकत चरननि में पाँवरियाँ सोहें नैन अन्यारे ॥
बिथुरे बार अंस भुज दीने सुरत रंग में भीनें भारे ।
श्रीहरिप्रिया पधराय सिंघासन बरन बरन आभरन सँवारे ॥२६॥

❀ दोहा ❀

देखि देखि सखि कहति यों, कैसे बनें उदार ।
जीवनि हितु-जन जियन की, नखसिख सजि सिंगार ॥

❀ पद ❀

नख सिख सजि सिंगार विराजैं ।
लै दरपन दिखरावति सुंदरि कैसे आज उदार बिराजैं ॥
देखि देखि सोभा अँग अँग की उमँगे उरनि अपार बिराजैं ।
श्रीहरिप्रिया हितू जन जिय की जीवनि प्रान अधार बिराजैं ॥२७॥

❀ दोहा ❀

प्रेम पुलकि अँग अंग में, देत हेत जुत कौर ।
भोग सिंगार अरोगहीं, सुकुंवारन सिरमौर ॥

❀ पद ❀

बैठे दोउ सुकुंवार सिरोमनि आरोगत हैं भोग सिंगार ।
चामीकर चौकी पर सुन्दर आनि धर्‌यौ सहचरि भर थार ॥
आदर सहित देत कर कौरनि कमल बदन करि करि मनुहार ।
श्रीहरिप्रिया प्रसंसि परसपर प्रेम पुलकि अँग अंग अपार ॥२८॥

❀ दोहा ❀

अँचवनि अँचवावति बियें, हितू हियें हुलसाय ।
रोरी तिलक रचावहीं,[1] बीरी भोग लगाय ॥

❀ पद ❀

लै झारी अँचवन अँचवावति ।
हितू सहेली हित की चित की समझि समझि हियरें हुलसावति ॥
दै मुख-वासु बिसाखा बीरी लै लै ललिता भोग लगावति ।
श्रीहरिप्रिया तिलक मस्तक रचि नीराजन की सौंज सजावति ॥२९॥

---

१ पा०—बतावहीं

❀ दोहा ❀

सजि लाई आरति सखी, अग्रवर्त्ति कर दीय ।
अद्भुत रीति उतारहिं, निरखि निरखि छबि बीय ॥

❀ पद ❀

मूरतिमान सिंगार सहचरी सजि लाई आरति सिंगार की ।
आनि दई कर अग्रवर्त्ति कें कहा कहों सोभा कनक थार की ॥
अद्भुत रीति उतारति वारति निरखि सुछबि विवि वर उदार की ।
श्रीहरिप्रिया पुलक अँग अँग में बीढ़ी उर उमँगनि बिहार की ॥३०॥

❀ अनुरागिनि आनंदा मध्याभास ❀

❀ दोहा ❀

यह सुख दै सब सखिन कों, सहज सुरत रस लीन ।
कुंजन कुंजन बिहरहीं, निज इच्छा आधीन ॥

❀ पद ❀

चले तहाँ तें उरन उमँहियाँ । बिहरत कुंजन कुंजन मँहियाँ ॥
चाल मराल दियें गरबँहियाँ । तिरछी चितवनि निरखत छँहियाँ ॥
आसपास सोहें सब सँहियाँ । जुगलचंद मुख रुष चष चँहियाँ ॥
कोउ कर चौंर मोरछल गहियाँ । अप अपनी सब सोंज सजहियाँ ॥
बर बिहार वै सम बिहरहियाँ । श्रीहरिप्रिया प्रमोद प्रदहियाँ ॥३१॥

❀ दोहा ❀

रंगद रसदादिकन मन, सहज करत संचार ।
कुंजबिहारी लाल यों, बिहरत कुंजबिहार ॥

❀ पद ❀

कुंजबिहारी कुंजबिहारिनि कुंजबिहार बिहारें री ।

रंगद रसद रहसि वसुदादिक रमत सुरुचि अनुसारें री ॥

अमृत कुंज कौ अमृत लै लै पी पी प्रान प्रतिपारें री ।
फल कल चल दल थल विथलनि में श्रीहरिप्रिया संचारें री ॥३२॥

❀ दोहा ❀

विधि पूर्वक आदर सुरुचि, आरोगन रस पुंज ।
हितू सखिन के हेत करि, आये भोजन कुंज ॥

❀ पद ❀

भोजन कुंज में आये दोऊ भोजन करन सुहाये री ।
हितू सहेली हित चित अनुसरि करि आदर पधराये री ॥
विधि पूर्वक बैठे आसन पर अंग अंग सचुपाये री ।
श्रीहरिप्रिया आरोगत रुचि सों बिबिध भोग मन भाये री ॥३३॥

❀ दोहा ❀

सामा सजि सब सहचरी, परसत परम रसाल ।
निजु निजु रुचि भोजन करत, दोउ लाड़िली लाल ॥

❀ पद ❀

भोजन करत लाड़िली लाल ।
रतन जटित कंचन चौकी पर आनि धर्यौ सहचरि भरि थाल ॥
छप्पन धोग छतीसों षटरस लेह्य चोष्य भछि भोज्य रसाल ।
जैंवत जाहि सराहि सरस अति परसत रंग रँगीली बाल ॥
जे बिंजन कर पल्लवनि ते छुवति छबीली छई छबि जाल ।
ते ते विंजन ताहि ठौर ते लेत छबीलौ होत निहाल ॥
इहि विधि राजभोग आरोगत सुख संभोगत नैन विसाल ।
श्रीहरिप्रिया परस्पर दोऊ परम प्रवीन प्रेम प्रतिपाल ॥३४

❀ दोहा ❀

अँचवनि करि श्रीहरिप्रिया, बीरी मुख में लीनि ।
हित प्रमोद भरि मोद सों, तिहि छिन[1] आरति कीनि ॥

१. पाठान्तर समै

अँचवन करि आरोगे बीरी। हित प्रमोदिका आरति कीरी ॥
निरखि निरखि छबि नैंननि नीरी। भई सखियन की अँखियाँ सीरी ॥
मुदित महामन मोद मतीरी। जै जै उचरति धरत न धीरी ॥
श्रीहरिप्रिया जोरी नवलीरी। अलबेली अरु लाड़ लड़ीरी ॥३५॥

❀ दोहा ❀

पीवत पानी वारि के, जुगलचंद छबि देखि ।
अलकलड़े सुकुंवार जै, कहि कहि बचन विसेखि ॥

❀ पद ❀

जै जै अलकलड़े सुकुँवार ।
जै ज नित्यकिसोरी जोरी जीवनि प्रान अधार ॥
जै जै मोहन की उरमाला जै राधा उरहार ।
जै जै श्रीहरिप्रिया जुगल पर पीवत पानी वार ॥३६॥

❀ दोहा ❀

चले अंस भुज दीनि दोउ, करी हंस गति हीनि ।
सुख आसन रंग भीनि बनि, बैंठे परम प्रवीनि ॥

❀ पद ❀

चले दोउ अंसनि भुज दीनें। चाल मराल करी गति हीनें ॥
श्रमित जानि प्रीतम रस लीनें। मुकट छाँह प्यारी पर कीनें ॥
बैठे सुख आसन रंग भीनें। श्रीहरिप्रिया दोऊ परम प्रवीनें ॥३७॥

❀ अनुरागिनि सुरंगांगा मध्याभास ❀

❀ दोहा ❀

मध्य काल दिन जानि कें, उन्मादनि उन्मादि ।
सब सनमुख ह्वै रुख गहैं, कहैं जै नमो आदि ॥

श्रीरसिकिन्यै नमः

❀ स्तोत्र ❀

जय नमो राधा रसिकिनी। जय नमो मृदु मधु मुसिकिनी ॥१॥
जय नमो प्रीतम बल्लभा। जय नमो प्रणतनि सुल्लभा ॥२॥
जय नमो पिय मन रंजनी। जय नमो बिरह बिभंजनी ॥३॥
जय नमो प्रेम पयोधिनी। जय नमो रति रस बोधिनी ॥४॥
जय नमो सब सुख सागरी। जय नमो सब गुन आगरी ॥५॥
जय नमो अद्भुत आननी। जय नमो मन हर माननी ॥६॥
जय नमो चंद्रप्रभा हरा। जय नमो प्रेमा परपरा ॥७॥
जय नमो कोकिल कलरवा। जय नमो भव भंजनि भवा ॥८॥
जय नमो बीरी चर्बिता। जय नमो गुननिधि गर्बिता ॥९॥
जय नमो अधर प्रबालनी। जय नमो रदन सुढालनी ॥१०॥
जय नमो नासा चटकनी। जय नमो पियमन अटकनी ॥११॥
जय नमो नकबेसरि धरा। जय नमो प्रीतम मन हरा ॥१२॥
जय नमो नैंन विसालनी। जय नमो रूप रसालनी ॥१३॥
जय नमो अजन अंजिता। जय नमो खंजन गंजिता ॥१४॥
जय नमो ईछन आतुरा। जय नमो चितवनि चातुरा ॥१५॥
जय नमो भौंहें सोहिनी। जय नमो पिय मन मोहिनी ॥१६॥
जय नमो श्रुति ताटंकिनी। जय नमो अलकनि बंकिनी ॥१७॥
जय नमो आड़ ललाटिका। जय नमो दिव्य सुहाटिका ॥१८॥
जय नमो सीस सुफूलनी। जय नमो नील दुकूलनी ॥१९॥
जय नमो सुभ सीमंतनी। जय नमो रस बरसंतनी ॥२०॥
जय नमो सुख सरसंतनी। जय नमो सुभ दरसंतनी ॥२१॥
जय नमो गण्ड उदारनी। जय नमो चिबुक सुचारनी ॥२२॥
जय नमो कंठ अदूषना। जय नमो जगमग भूषना ॥२३॥

जय नमो कंचुकि कस बनी। जय नमो नवरंग रस सनी ॥२४॥
जय नमो उरज सुढारनी। जय नमो मनिगन हारनी ॥२५॥
जय नमो मुक्ता दामिनी। जय नमो अति अभिरामिनी ॥२६॥
जय नमो उदर सुबेसिनी। जय नमो नाभि सुदेसिनी ॥२७॥
जय नमो सुंदरि ग्रीवनी। जय नमो सोभा सींवनी ॥२८॥
जय नमो बाहु बिचित्रनी। जय नमो परम पवित्रनी ॥२९॥
जय नमो चूरी चित्रनी। जय नमो मोहन मित्रनी ॥३०॥
जय नमो कंकन कंचना। जय नमो अति[२] रस संचना ॥३१॥
जय नमो पहुँचि[१] प्रभाउका। जय नमो अगनित भाउका ॥३२॥
जय नमो हरिकर पाननी। जय नमो रत्न विधाननी ॥३३॥
जय नमो मनि मुद्रावली। जय नमो नग हीरावली ॥३४॥
जय नमो नख चन्द्रावली। जय नमो परम प्रभावली ॥३५॥
जय नमो करतल कलितनी। जय नमो रंग सुललितनी ॥३६॥
जय नमो कृस कटि राजनी। जय नमो किंकिनि बाजनी ॥३७॥
जय नमो पृथुल नितंबनी। जय नमो मन अवलंबनी ॥३८॥
जय नमो जंघ सुकेलनी। जय नमो प्रीतम झेलनी ॥३९॥
जय नमो जानु सुहेतकी। जय नमो पिंडुरी केतकी ॥४०॥
जय नमो जेहरि हेमकी। जय नमो मूरति प्रेमकी ॥४१॥
जय नमो गुल्फ सुसाजिता। जय नमो नूपुर बाजिता ॥४२॥
जय नमो एड़ी अद्भुता। जय जमो रंग सु संजुता ॥४३॥
जय नमो पद् पद् पानभा। जय नमो सब सुख दानभा ॥४४॥
जय नमो अंगुरी चारुभा। जय नमो सुखद् सुढारुभा ॥४५॥
जय नमो हंसक अनवटा। जय नमो सोहत सुभ घटा ॥४६॥

पाठा० १. पहोंचि, २. महा

जय नमो नखमनि बिसदनी। जय नमो पद तल रसदनी ॥४७॥
जय नमो कंता कामिनी। जय नमो नवघन दामिनी ॥४८॥
जय नमो छबि चंपकतनी। जय नमो सहजहिं सुखसनी ॥४९॥
जय नमो गौरांगी प्रिया। जय नमो स्यामा सुभ श्रिया ॥५०॥
जय नमो रास बिलासनी। जय नमो रहसि हुलासनी ॥५१॥
जय नमो प्रेम प्रकासनी। जय नमो नेह निवासनी ॥५२॥
जय नमो रंग बिहारिनी। जय नमो पिय हिय हारिनी ॥५३॥
जय नमो पिय उर धारिनी। जय नमो रस बिस्तारिनी ॥५४॥
जय नमो अखिलानंदनी। जय नमो बल्लभ-बंदनी ॥५५॥
जय नमो पिय मन फंदनी। जय नमो परमाकंदनी ॥५६॥
जय नमो जीवनि जीयकी। जय नमो प्रेमा पीयकी।५७॥
जय नमो प्रेम प्रदायिका। जय नमो नागरि नायिका ॥५८॥
जय नमो रति रमनीयका। जय नमो अति कमनीयका ॥५९॥
जय नमो प्रगलभ भक्तिदा। जय नमो तुरिय बिरक्तिदा ॥६०॥
जय नमो निगमागम सदा। जय नमो रसिकानंददा ॥६१॥
जय नमो राधा नामिनी। जय नमो हरिप्रिया स्वामिनी ॥६२॥३८॥

❀ दोहा ❀

(श्री) हरिप्रिया स्वामिनी प्रणमि, पुनि प्रणमन प्रिया[१] प्रान।
कमलनैंन श्रीकृष्ण कहि, बरनत बिबिध बिधान ॥

❀ स्तोत्र ❀

जय श्रीकृष्ण कमलदल लोचन दुख मोचनि मृग लोचनि राधा ॥१॥
जय श्रीकृष्ण स्यामघन सुंदर दिव्य घटा तन गोरी राधा ॥२॥
जय श्रीकृष्ण रसीलो नागर रसिक रसीली नागरि राधा ॥३॥
जय श्रीकृष्ण छबीलो दूलह नवल छबीली दुलहिनि राधा ॥४॥

पा० १—प्रणतोपिय

जय श्रीकृष्ण मनोहर मूरति परम मनोहर मूरति राधा ॥५॥
जय श्रीकृष्ण सदा सुख सागर सहज सदा सुख सिंधुनि राधा ॥६॥
जय श्रीकृष्ण राधिका बल्लभ कृष्ण बल्लभा रसिकिनि राधा ॥७॥
जय श्रीकृष्ण प्रिया मन मोहन प्रान प्रिया मन मोहनि राधा ॥८॥
जय श्रीकृष्ण चारु चन्द्रानन सुधा सदन ससि बदनी राधा ॥९॥
जय श्रीकृष्ण पद्म परिपूरन पूरन परम पद्मनी राधा ॥१०॥
जय श्रीकृष्ण तमाल तरुन छबि कनक लता छबि छाजति राधा ॥११॥
जय श्रीकृष्ण मीन मन मानहु निरमल जल जनु जीवनि राधा ॥१२॥
जय श्रीकृष्ण नित्य नवरंगी नवरंगनि रँग भीनी राधा ॥१३॥
जय श्रीकृष्ण सुकोमल सीवां अति सुकुँवारी सीवां राधा ॥१४॥
जय श्रीकृष्ण अमित गुन आगर अति अद्भुत गुन आगरि राधा ॥१५॥
जय श्रीकृष्ण विसाल विभाकर रूप रसाल प्रभाकरि राधा ॥१६॥
जय श्रीकृष्ण सुभग सुभ सुन्दर सरस सुभग सुभ सुंदरि राधा ॥१७॥
जय श्रीकृष्ण बिलास बिसारद विसद बिलास बिचच्छनि राधा ॥१८॥
जय श्रीकृष्ण दिव्यदुति कंद्रप कोटि दिव्य रति राजति राधा ॥१९॥
जय श्रीकृष्ण किसोर नित्य नव नित्य नवीन किसोरी राधा ॥२०॥
जय श्रीकृष्ण नील मनि आभा कंचन मनि आभा अति राधा ॥२१॥
जय श्रीकृष्ण लाड़िलौ प्रीतम प्यारी प्रिया लाड़िली राधा ॥२२॥
जय श्रीकृष्ण सिरोमनि सर्बस सर्व सिरोमनि सुंदरि राधा ॥२३॥
जय श्रीकृष्ण अखिल परमापर परमापर प्रानेसा राधा ॥२४॥
जय श्रीकृष्ण कलपतरु तरवर तरतम कलप तरोवरि राधा ॥२५॥
जय श्रीकृष्ण हरे[1] हरि स्वामी श्रीहरिप्रिया स्वामिनी राधा ॥२६॥३९॥

❀ दोहा ❀

मन मोहन मोहन महल, पौढ़े जाय प्रज्यंक ।
प्यारी सहचरी सब रहीं, न्यारी करन निसंक ॥

❀ पद ❀

मोहन मोहनी मन रंजन ।
भुजा परस्पर अंसनि दीनें चलत हंस गति गंजन ॥
मोहन मंदिर महामनोहर करि प्रवेस सुख संजन ।
प्यारी सखी रहीं न्यारी जहँ श्रीहरिप्रिया भय भंजन ॥४०॥

❀ दोहा ❀

सुख सरसत बरसत रसैं, रुचि तरंग नहिं पार ।
(श्री) हरिप्रिया दोउ बिलसहीं, सुमन सेज साधार ॥

❀ पद ❀

बिहरत सुमन सेज पर दोऊ ।
अलबेले आनँद की मूरति और तहाँ नहिं कोऊ ॥१॥
प्यारी के बदनारबिन्द की लेत बलैयाँ लाल ।
पुनि पुनि परम प्रसंसत प्रीतम प्रिया प्रेम प्रतिपाल ॥२॥
भरि अँकवारि कुँवरि कुवर बर करत बिहार बिनोद ।
मदन केलि रसमत्त मगन भये मन न समावत मोद ॥३॥
नेति-नेति बचनामृत सुनि सुनि पिय हिय बढत मनोज ।
त्यों-त्यों अति रनधीर मिलावत अंसनि अरुन सरोज ॥४॥
नूपुर मुखर किंकिनी कौ अति होत रुनझून राव ।
अमित अनंगन के अंगन में उपजत अगनित भाव ॥५॥
सुख सरसावत रस बरसावत रुचि तरंग नहिं पार ।
श्रीहरिप्रिया निज दासी निरखति लता ओट[1] निरवार ॥४१॥

❀ दोहा ❀

कहति परस्पर सहचरीं, उर में भरी उछाहू ।
निरखि-निरखि सुख या समै, लेहु नैनन कौ लाहु ॥

[1] पा०—वोट

❀ पद ❀

नैनन कौ लाहौ लीजिये ।
गोरी स्याम सलौनी जोरी सुरस माधुरी पीजिये ॥
छिन-छिन प्रति प्रमुदित चित चावहिं निज भावहिं में भीजिये ।
श्रीहरिप्रिया निरखि तन मन धन लै न्यौछावरि कीजिये ॥४२॥

❀ दोहा ❀

कोक कला कुल में कुसल, कल किसोर कमनीय ।
मन मोहत है मोहनी, मूरति अति रमनीय ॥

❀ पद ❀

मन मोहत मूरति मोहनी ।
सब सुख सींव सरूप सिरोमनि साँवरि सूरति सोहनी ॥
कोक कला कुल कल कमनीय किसोर कमल दृग जोहनी ।
श्रीहरिप्रिया प्रान जीवनि धन लावनिता ललचोहनी ॥४३॥

❀ दोहा ❀

कृष्णबल्लभा लाड़िली, राधाबल्लभ लाल ।
बसहु निरंतर हीय में, आनँद रूप रसाल ॥

❀ पद ❀

जीवनि धन राधाबल्लभ लाल ।
कृष्णबल्लभा रसिकिनि राधा वारिज बदनी बाल ॥
जुगल किसोर किसोरी जोरी गोरी-स्याम तमाल ।
बसहु निरंतर हियें (श्री)हरिप्रिया आनँद रूप रसाल ॥४४॥

❀ दोहा ❀

अँग अँग आभा हरन मन, सब सुख सींव सरूप ।
अति अलबेली निपटहीं, अँग रसभरी अनूप ॥

❀ पद ❀

रँग रस भरी निपट अलबेली । लाल लड़े की लाड़ लड़ेली ॥
अंग अंग आभा मन हरनी । आलिंगन चुंबन आभरनी ॥
नवल नागरी नीरज नैंनी । कोक कला कोविद पिक बैंनी ॥
सब सुख सींव सरूप अगाधा । श्रीहरिप्रिया स्वामिनी राधा ॥४५॥

❀ दोहा ❀

चक्रवर्तिनी जोरि यह, जीवनि प्रान धनीय ।
श्री राधा चूड़ामनी, रसिक मुकट मनि पीय ॥

❀ पद ❀

रसिक मनि मुकट श्रीराधे चूड़ामनी ।
करत हैं केलि दोउ कंठ भुज मेलि के जोरि चक्रवर्तिनी कनक मर्कत तनी ॥ मधुर मृदु हँसनि में जोति जगमग दसन लसनि अनुराग बस सरस रस बरसनी । परम परवीन रहे लीन रति रंग में हितू श्रीहरिप्रिया प्रान जीवनि धनी ॥४६॥

❀ दोहा ❀

यह सुख मुख कहत न बनै, जो सुख सजवति सेज ।
पान अदन रस वदन कौ, देत लेत हियें हेज ॥

❀ पद ❀

यह सुख मुख कहत न बनि आवैं ।
नैंननि ही के द्वारनि लै लै हीयन मांहि बसावैं ॥
अदन पान अरबिंद वदन रस मदन सदन सरसावैं ।
कमल कमल प्रतिपालन कै कै अति आनंद बढ़ावैं ॥
रमत रहसि रस मन मन-मानें बितन बारि बरसावैं ।
तऊ चोंप चित बढ़त चौगुनी खेलत हूं न अघावैं ॥

घरी चारि दिन रह्यो जानि कें सहचरि आनि जगावैं ।
श्रीहरिप्रिया सुखद सेज्या तें सुमनासन पधरावैं ॥४७॥

❀ अनुरागिनि गौरमुखी मध्याभास ❀

❀ दोहा ❀

जै जै आनँद कंदनी, श्रीहरिप्रिया किसोरि ।
जै जै राधा रसिकिनी, रसिक बिहारी जोरि ॥

❀ पद ❀

जै जै राधा रसिकिनी, रसिक बिहारी जोरी बनी ॥
जै जै स्यामा लाड़िली, मन मोहन मन चाड़िली ॥
जै ज रूप उजागरी, नित्य नवीना नागरी ॥
जै जै आनँद कंदनी, जन जीवनि जग बंदनी ॥
जै जै सब सुख धामिनी, श्रीहरिप्रिया जै स्वामिनी ॥४८॥

❀ दोहा ❀

उत्थापन के भोग की, विधिवत रचना बानि ।
अरुगावति श्री हरिप्रियें निरखि-हरखि हियें आनि ॥

❀ पद ❀

तर मेवा अरु विविध मिठाई ।
अरघ देइ सादर सुख सुंदरि सुंदर स्वरन थार भरि लाई ॥
सब सब रितु की सब सामग्री सुखमय सरस सखी सरसाई ।
आरोगत दोऊ अलबेले कहि न परत हित की हितवाई ॥
अरस परस गरसा सुख देत दिवावति दंपति रुचि उपजाई ।
अति रोचक अमृत अमृतावत बिचि-२ बहु विधि बिहँसि बढ़ाई ॥
मुदित महामन मंजरि सुंदरि सहचरि सखी सहेलि सुहाई ।
श्रीहरिप्रिया की निरखि निरखि छवि हरखि-हरखि हियें हुलसाई ॥४९

❀ दोहा ❀

अँचवन अँचि मुख-बास लै, दै गरबाँह बिसाल ।
फूल सखी की फूलि में, चले फूलि दोउ लाल ॥

❀ पद ❀

फूलि चले दोउ लाल बिहारी । फूल सखी की फूल निहारी ॥
फूली सँग सोंहें सहचारी । अप अपनी सब सोंज सँवारी ॥
कोउ कर ढुरवति चौंर सुढारी । कोउ मोरछल लिये बिजनारी ॥
कोउ कर लियें डबा कोउ झारी । कोउ लियें सुकर मुकर मनहारी ॥
देखत देखत बन फुलवारी । सुख आसन बैठे सुखकारी ॥
(श्री)हरिप्रिया जोरी जीय जियारी । प्रान - प्रीतमा पिय पियारी ॥५०॥

❀ दोहा ❀

अंग अंग रस रंग में, रली अली अलबेलि ।
आरति जानि दुहून की, आरति करति सहेलि ॥

❀ पद ❀

संध्या आरति करति सहेली । स्यामा-स्याम गुन गर्व गहेली ॥
निरखि निरखि छबि नैंन नवेली । अँग अँग रंग रली अलबेली ॥
सोहति उर चौसर चंबेली । रस रंजन राजति रति रेली ॥
तरु सिंगार प्रेम की बेली । श्रीहरिप्रिया हरत मन हेली ॥५१॥

श्रीराधा पराभक्ति प्रदायिन्यै नमो नमः

❀ दोहा ❀

पराभक्ति रति वर्द्धिनी, स्यामा सब सुख दैनि ।
रसिक मुकटमनि राधिके, जै नव नीरज नैनि ॥

❀ स्तोत्र ❀

जयति जै राधा रसिकमनि मुकट मन - हरनी त्रिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥१॥

जयति गोरी नव किसोरी सकल सुख सीमा श्रिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥२॥
जयति रति रस बर्द्धिनी अति अद्भुता सदया हिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥३॥
जयति आनँद कंदनी जगबंदनी बर बदनिये ;
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥४॥
जयति स्यामा अमित नामा वेद विधि निर्वाचिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥५॥
जयति रास-बिलासनी कल कला कोटि प्रकासिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥६॥
जयति बिबिध बिहार करनी रसिक रवनी सुभ धिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥७॥
जयति चंचल चारु लोचनि दिव्य दुकुला भरनिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥८॥
जयति प्रेमा प्रेम सीमा कोकिला कल बैनिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥९॥
जयति कंचन दिव्य अंगी नवल नीरज नैनिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥१०॥
जयति बल्लभ-बल्लभा आनंद-कलभा तरुनिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥११॥
जयति नागरि गुन उजागरि प्रान-धन मन हरनिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥१२॥
जयति नौतम नित्य लीला नित्य धाम निवासिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥१३॥

जयति गुन माधुर्य भूपा सिद्धि रूपा सक्तिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥१४॥
जयति सुद्ध सुभाव सीला स्यामला सुकुमारिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥१५॥
जयति जस जग प्रचुर परिकर हरिप्रिया जीवनि जिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥१६॥

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः

❀ दोहा ❀

नव - नव रंगि त्रिभंगि जै, स्याम सुअंगी स्याम ।
जै राधे जै हरिप्रिये, श्रीराधे सुख धाम ॥

❀ स्तोत्र ❀

जय राधे जय राधे राधे जय राधे जय श्रीराधे ।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण जय कृष्ण जय श्रीकृष्ण ॥१॥
स्यामा गोरी नित्य किसोरी प्रीतम जोरी श्रीराधे ।
रसिक रसीलो छैल छबीलो गुन गरबीलो श्रीकृष्ण ॥२॥
रासविहारनि रसबिसतारनि पिय उर धारनि श्रीराधे ।
नव - नव रंगी नवल त्रिभंगी स्याम सुअंगी श्रीकृष्ण ॥३॥
प्रान पियारी रूप उज्यारी अति सुकुँवारी श्रीराधे ।
मैंन मनोहर महा मोद कर सुंदर बर तर श्रीकृष्ण ॥४॥
सोभा सैनी मोभा मैनी कोकिल बैनी श्रीराधे ।
कीरतिवंता कामिनिकंता श्री भगवंता श्रीकृष्ण ॥५॥
चंदा - वदनी कुंदा रदनी सोभा सदनी श्रीराधे ।
परम उदारा प्रभा अपारा अति सुकुँवारा श्रीकृष्ण ॥६॥
हंसागवनी राजति रवनी क्रीड़ा कवनी श्रीराधे ।
रूप रसाला नैंन बिसाला परम कृपाला श्रीकृष्ण ॥७॥

कंचनबेली रति रस रेली अति अलबेली श्रीराधे ।
सब सुख सागर सब गुन आगर रूप उजागर श्रीकृष्ण ॥८॥
रवनी रम्या तर[1] तर तम्या गुन आगम्या श्रीराधे ।
धाम निवासी प्रभा प्रकासी सहज सुहासी श्रीकृष्ण ॥९॥
सक्त्याह्लादनी अति प्रियवादनि उर उन्मादनि श्रीराधे ।
अँग अँग टौना सरस सलौना सुभग सुठौना श्रीकृष्ण ॥१०॥
राधा नामिनि गुन अभिरामिनि हरिप्रिया स्वामिनि श्रीराधे ।
हरे हरे हरि हरे हरे हरि हरे हरे हरि श्रीकृष्ण ॥११॥५३॥

❀ अनुरागिनि केलिकौमुदी मध्याभास ❀

❀ दोहा ❀

संध्या वंदन समय कौ, इहि विधि सुखहिं सजाय ।
मधुर गान मिलि गावहीं, मृदु बाजित्र[2] बजाय ॥

❀ पद ❀

मधुरा मधुर मृदंग बजावैं । अनुरागनि रागनि गुन गावैं ॥
सप्त सुरनि के सजनि सुनावैं । तोरैं तान मान उपजावैं ॥
संगीतन की रीति रचावैं । मूरछना गति ग्राम जमावैं ॥
नृत्यक सखी नृत्य दिखरावैं । लाग दाट के थाट थटावैं ॥
उरप तिरप हुरमई हुरमावैं । नई नई निपुनई निरमावैं ॥
कुसल कला क्रन हस्तक भावैं । भ्रुकुटि विलासनि बिहँसि बढ़ावैं ॥
इहिं विधि उर अभिलाष पुरावैं । सब मिलि श्रीहरिप्रियैं दुलरावैं ॥५४॥

❀ दोहा ❀

निरखि हरखि श्रीहरिप्रिया, अँग संगिनी सहेलि ।
लाल लाड़िली करत मिलि, रहसि कुंज में केलि ॥

❀ ❀ ❀

पाठा० १. तरू, २. बाज्यंत्र

❀ पद ❀

लाल लाड़िली केलि निकुंजे ।
कमल कमल क्रीड़ा-कृत कौसल रहसि बिहँसि रस केलि निकुंजे ॥
परस सरस मरसत उरजनि कर करसत करजनि केलि निकुंजे ।
अँग संगनि सहचरि श्रीहरिप्रिया हरखि निरखि सुख केलि निकुंजे ॥५५॥

❀ दोहा ❀

ऐंन मैंन सुख सैंन दोउ, मूरति मृदुल बिहार ।
करत रहौ निसिदिन विपिन, छिन-छिन हूँ बलिहार ॥

❀ पद ❀

या बानिक पर हूँ बलिहारी ।
विपिन बिहार करत रहौ निसिदिन छिन-छिन प्रति पर हूँ बलिहारी ॥
ऐंन मैंन सुख सैंन सखिन के चैंन दैंन पर हूँ बलिहारी ।
श्रीहरिप्रिया मनोज मनोहर मृदु मूरति पर हूँ बलिहारी ॥५६॥

❀ दोहा ❀

या सोभा सम करन को, रति कंदर्प करोरि ।
हरन हितू जन हियनि की, बनी भाँवती जोरि ॥

❀ पद ❀

बनी भाँवती जोरी नवलकिसोर किसोरी ।
साँवरी सलोंनी गोरी सोभा सिंधु में झकोरी निरखत छबि होरी पल न लगै पलको री ॥ रंग रस बोरी मानों ढोरी साँचे एक ही में करें चित बित चोरी छबि नहीं थोरी । हरत हितू श्रीहरिप्रिया मो हियो री ऐसी दुति पर वारों रति कंदर्प करोरी ॥५७॥

❀ दोहा ❀

सिंघासन श्रीहरिप्रिया, सोहत सुढर ढरे ।
रसिक बिहारि बिहारनी, दोउ गुन रूप भरे ॥

❀ पद ❀

बने दोउ रसिकबिहारी बिहारनि रूप भरे गुन भरे ।
अंग अंग सोहें रँग भीने अभरन रतन जरे ॥
पहरें बसन सुबरनी छबि मनहरनी ढरनि ढरे ।
श्रीहरिप्रिया बैठे सिंघासन निरखत नैंन ठरे ॥५८॥

❀ दोहा ❀

नख सिख सुंदर बरन बर, अंग अंग आभर्न ।
जोरी स्यामा-स्याम की, बनी मैंन मन हर्न ॥

❀ पद ❀

स्याम स्यामा बनी जोरी मन हरन री ।
कोटि कंदर्प रति दिव्य दंपति दरस, सरस अनुराग अँग अंग बर बरन री ॥ मुकट-मंजुल चिकुर-चंद्रिका नील पट, सीस सोभा सुमन-मिलि मुकत लरन री । तिलक ललाट ताटंक कुंडल श्रवन, गंड मंडल झलक अलक सौं ढरन री ॥१॥ भौंह सोहनि चपल नैंन अंजन सुरति, रंग रंजन सुकंज गंज खंजरन री । नासिका अग्र मुक्ता हलनि झलमलति, देखि दुति दलमलति अमित दुति धरन री ॥२॥ बदन सुख सदन मधि रदन रस रगमगे, रद छदन अरुनई हू तें अति अरुन री । मंद सस्मित मधुर बत-रसन रस रते, अति अलंकृत किये दिये भुज गरन री ॥३॥ कनक केयूर चूरी कटक कंकने पहुँचि, करपत्र मुँदरी सुकर तरन री। नखन मनि जोति लखि होत लोयनि, ललक पलक चाहत न छबि छलक तें टरन री ॥४॥ कसिब कंचुक कसी अतलसी कंचुकी बसी, उर उरबसी स्त्रकनि की सरन री । पदिक चौकी सरी चौसरी लरी मिलि, लसत सुंदर तनू दरजु दुख दरन री ॥५॥ कटि निकट जटित कटि पटी पुरट, सुघटनि पृथु नितंबनि अटी मिज पटाबरन री । नेहरी पान-पद परसि पायल,

परत, अनुसरत ऐसें आदेस आचरन री ॥६॥ परम रमनी महारजित नूपुर रतन खचित, हंसकनवट नखनि रँग ररन री। पदतली ललित कोमल कमल दलन सम, निरखि दृग मधुप गति होति विसमरन री ॥७॥ उदित आनंदमय इन्दु इकरस सदा, रसिक सिरमौर पटतर जु बर परन री। अमित अद्भुत प्रभा पुंज श्रीहरिप्रिया, सकल सोभा स्वकृति सम न कोउ करन री ॥८॥५८।

❀ अनुरागिनि कर्णकान्ता मध्याभास ❀

❀ दोहा ❀

इहि प्रकार बीती जबै, घरी चार रजनी ।
अदन सदन आये दोउ, संग लिये सजनी ॥

❀ पद ❀

सँग लिये सजनी पिय पियारी ।
इहि बिधि घरी चार रजनी सुख बिलसि चले दोउ करन बियारी ॥
अदन सदन आये मन भाये पधराये करि सौंज तियारी ।
श्रीहरिप्रिया प्रवीन परस्पर दोउ दोउन की जीय जियारी ॥६०॥

❀ दोहा ❀

गरस परसपर देत मुख, सरस पुलक अँग अंग ।
जिय ज्यारी ब्यारी करत, पिय प्यारी के संग ॥

❀ पद ❀

करत बियारी पिय प्यारी सँग ।
अरस परस गरसा मुख देत दिवावत अति उपजावत रति रँग ॥
मधुर दूध संमिलित मिश्रि भरि कनक-कटोरें पीवत सोमँग ।

श्रीहरिप्रिया अरोगत रुचि सों बिबिध पान पकवान पुलक अँग ॥६१॥

❀ दोहा ❀

अम्बुज बदनी सहचरी, बिधि अँचवन अँचवाहि ।
बीरी रचि रचि देत कर, जुगलचंद मुख चाहि ॥

❀ पद ❀

अंबु अँचवावति अंबुज बदनी ।
कर लियें झारी कनक कटोरनि भरि भरि प्यावति अंबुज बदनी ॥
रचि रचि बीरी देत दोउन कर उर उमगावति अंबुज बदनी ।
श्रीहरिप्रिया चखि चाहि चकित रहि कहि नहिं आवति अंबुजबदनी ॥६२

❀ दोहा ❀

निज इच्छा अनुसारनी, निज सहचरि मृगनैंनि ।
सारति वारति आरती, समझि सैन की सैंनि ॥

❀ पद ❀

आरति बारति अलि मृगनैंनी ।
निज सहचरि इच्छा अनुसारनि समझि सैंन की सैना बैंनी ॥
जगमग जोति जगति दीपावलि कनक थार मधि सचित सुचैंनी ।
श्रीहरिप्रिया हितवाय हियनि में लै बलाय सनमुख सुख दैंनी ॥६३॥

❀ दोहा ❀

सयन अयन सुख सखी जहाँ, सची सुपेसल सेज ।
तापर पौढ़े एक पट, ओढ़ि रँगीले हेज ॥

❀ पद ❀

सुंदर सुहाई सुखदाई सुख सेज पर हेज भरे पौढ़े पलकें लगि गईं ।
भुज सिरहाने दियें हिये सों लगाय हिये प्रेमरस पियें पलकें लगि गईं ॥
विपुल पुलक लस अग आलस बस अरसनि परस पलकें लगि गईं ।
श्रीहरिप्रिया की ओरी नवलकिसोरी ओढ़ें पियरि पिछौरी पलकें लगि गईं॥

❀ दोहा ❀

हितू सहचरि हित भरी, चाँपि चरन चित चाय ।
हरें हरें हटि पट दिये, झटि दै बाहरि आय ॥

❀ पद ❀

हितू सखी हित की हितवाई ।
पाँय पलोटि हरें हरें हटिकें पट दे झटि दे बाहरि आई ॥
रंध्रनि मग लगि रूप माधुरी अवलोकति सहचरि समुदाई ।
श्रीहरिप्रिया की सहज सुरति रति गान करति मधुरे मनभाई ॥

अनुरागिनि अलबेलि केलि मध्याभास

❀ दोहा ❀

अछन अछन उच्चरहु री, ज्यों ये परें न जागि ।
श्रीहरिप्रिया सुख सेज पर, सोये सुख श्रम पागि ॥

❀ पद ❀

सुख सेज श्रमित दोउ स्यामा-स्याम रति रंग भरें गरें रहे लागि ।
अँग अँग उरझे अँग अंगनि में परम प्रेम रस मध्य पागि ॥
सिथिल वसन रसना रतनावलि राजति मुख मुख राग रागि ।
श्रीहरिप्रिया के लछन बरनन करे अछन अछन मति परें जागि ॥६६॥

❀ दोहा ❀

देखत ही दृग थकित ह्वै, रहत गहत नहिं चेत ।
श्रीहरिप्रिया के अंक में, अति निसंक छबि देत ॥

❀ पद ❀

आजु छबि फबी है री मदन मोहन की ।
मंद मंद मुसकनि मोहनि तन अधखुली पल जोंहन की ॥
देखत ही दृग रहत थकित ह्वै सोभा कटीली भोंहन की ।
श्रीहरिप्रिया अंक मधि अंकित अति निसंक सोंहन की ॥६७॥

अनुरागिनि विचित्रशोभा मध्याभास

❀ दोहा ❀

अर्द्ध सरवरी में रही, घरी छ सातक आय ।
तब इच्छा अनुसारनी, सहचरि दिये जगाय ॥

❀ पद ❀

दिये जगाय जुगलबर जबहीं ।
अर्द्ध सरवरी माहिं छ सातक रही जानि निज सहचरि तबहीं ॥
इहि प्रकार इच्छा अनुसारनि उर अभिलाखनि पुरये सबहीं ।
श्रीहरिप्रिया के दरस परस बिनु निमिख न एक रहत हैं कबहीं ॥६८॥

❀ दोहा ❀

सोभा हद सोहत सरस, रद छद चित्र अमंद ।
लै लरमुक्ता वारहीं, लखि जगमग मुख चंद ॥

❀ पद ❀

जगमगे चन्द्र बदन की जोति ।
अति सुन्दर सोभा की सींवां लखि चखिचौंधि होति ॥
प्रीतम के मुख अंबुज रस करि, चित्रत अमित उदोति ।
लखि सुख श्रीहरिप्रिया हितू सखि वारति हैं लरमोति ॥६९॥

❀ दोहा ❀

निकसे बिकसे बदन बिबि, विपुल पुलक भुजजोरि ।
भई प्रमुदित प्रमदावली, ज्यों लहि चंद चकोरि ॥

❀ पद ❀

निकसि चले दोउ बहियाँ जोरी ।
प्रमुदित संग लगी प्रमदावलि लहि चंदहि ज्यों तृषित चकोरी ॥
बिकसत बदन सदन सुख सोंहन मन मोहन छबि फबति न थोरी ।
श्रीहरिप्रिया सिंगार सिंघासन बैठे आनि किसोर किसोरी ॥७०॥

❀ दोहा ❀

प्रान प्रियन के जियन की, जानि मोद मनमानि ।
अली चली विमली जहाँ, रासथली रसदानि ॥

❀ पद ❀

रसदैंनी रसथली सुहाई ।
प्रान प्रियन के जानि जियन की अली चली विमली तहँ आई ॥
मोहन मदन मनोज चंद्र की चटकि चंद्रिका रहि छित छाई ।
श्रीहरिप्रिया मंडल प्रवेस करि अति सुदेस रस रहसि रचाई ॥७१॥

अनुरागिनि कंदर्पकामा मध्याभास

❀ दोहा ❀

बिबिध भाँति गुनभेद गति, रीझि भींजि अँग अंग ।
नचत नवल नागर दोऊ, रहसि रास रस रंग ॥

❀ पद ❀

नचत नवल नागर रहसि रास रंगे ।
सुभग वन पुलिन थल कलपतरु तल बिमल मंजु मंडल कमलदल अभंगे ॥
रूनुनु नूपुर रमकि झमकि हंसक झुनुनु कुनुनु किंकिनिकलितकटिसुधंगे ।
चरन की धरन उच्चरन सप्तक सुरन हरन मन नन करन उर उमंगे ॥
भृकुटि मटकें लटें लटकि अटकें उझटि भटकि नासा-पुटें चट्रकि चंगे ।
अलग लग दाट अपटें झपट झट रपट सुघट सांगीत रट थुंग थुंगे ॥
खिरर थिररें तृवट तिर्प उरपें उरनि मुरनि सिर ढुरनि अति गति सुढंगे ।
चखनि चलवनि चपल चिंदु चाली चलनु चर्चरी भेद भ्रुवनि विभंगे ॥
रीझि रस भीजि रिझवार दोउ रसिक बर परसपर पी सुधाधर समंगे ।
मत्त अनुराग अंगे अनंगे रमत रंग श्रीहरिप्रिया नित्य संगे ॥७२॥

❀ अनुरागिनि खंजनाक्षी मध्याभास ❀

❀ दोहा ❀

इहि बिधि रास रहस्य रमि, श्रीहरिप्रिया सहेत ।
बिबिध भाँति रस रीति सों, ब्याह सदन सुख लेत ॥

❀ पद ❀

दोऊ ए ब्याह सदन सुख लेत ।
बिबिध भाँति की रीति भाँति सों लाड़लाड़ि[1] सरबेत ॥
पहरें बसन सुहानें अभरन मौरी मौर छबि देत ।
अंग अंग सोहन मनमोहन श्रीहरिप्रिया सहेत ॥७३॥

❀ दोहा ❀

ब्याहि बिराजें सेज पर, श्रीहरिप्रिया लै संग ।
हुलसि हुलसि हिय बिलसहीं, बाढ़्यौ अति रति रंग ॥

❀ पद ❀

सेज पर बाढ़्यौ अति रति रंग ।
दूलह दुलहिन अलक लड़ीले अलबेले अँग अंग ॥
नित्य नवीन किसोर लाल दोउ नित्य नवीन अभंग ।
बिलसत बिबिध बिलास हास रस श्रीहरिप्रिया के संग ॥७४॥

❀ दोहा ❀

अनहोंने सुख लैं चले, गौनें के गुन जाल ।
सिंघासन पर आयकें, बैठत भये दोउ लाल ॥

❀ पद ❀

सिंघासन बैठत भये दोउ लाल ।
अनहोंने गौनें के सुख लै दै अंसनि भुज माल ॥
चहुँदिसि ठाढ़ी अति रति बाढ़ी सुखद सहचरी जाल ।
श्रीहरिप्रिया की रूपमाधुरी निरखत नैंन निहाल ॥७५॥

पा० १—लाड़ि लाड़ि

❀ श्रीराधा-रंगविहारिणीभ्यो नमः ❀

❀ दोहा ❀

रंग रँगीली सहचरी, रंग रँगीली आदि ।
श्रीराधा रंग बिहार कों, बरनंति है उनमादि ॥

❀ स्तोत्र ❀

श्रीराधा रंगबिहारनि, श्रीराधा पिय उरधारनि ।
श्रीराधा सुख बिसतारनि, श्रीराधा रति सुखसारनि ॥
श्रीराधा अति सुकुँवारी, श्रीराधा स्यामा प्यारी ।
श्रीराधा रूप उज्यारी, श्रीराधा जोबन वारी ॥
श्रीराधा नेह नवीना, श्रीराधा प्रेम प्रवीना ।
श्रीराधा रति रसभीना, श्रीराधा हित अधीना ॥
श्रीराधा गुन गरबीली, श्रीराधा छैल छबीली ।
श्रीराधा सोभा सीली, श्रीराधा रसिक रसीली ॥
श्रीराधा स्याम सहेली, श्रीराधा कंचन बेली ।
श्रीराधा गरब गहेली, श्रीराधा अति अलबेली ॥
श्रीराधा नित्य किसोरी, श्रीराधा गुन निधि गोरी ।
श्रीराधा मन मृग डोरी, श्रीराधा प्रीतम जोरी ॥
श्रीराधा सब सुख सागरि, श्रीराधा सब गुन आगरि ।
श्रीराधा रूप उजागरि, श्रीराधा नव नित नागरि ॥
श्रीराधा दिव्य सुदामनि, श्रीराधा भव्य सुभामनि ।
श्रीराधा कंता कामनि, श्रीराधा भा अभिरामनि ॥
श्रीराधा सोभा सैंनी, श्रीराधा मोभा मैंनी ।
श्रीराधा पंकज नैंनी, श्रीराधा कोकिल बैंनी ॥
श्रीराधा मृदु मधु हसिता, श्रीराधा द्विज दुति लसिता ।

श्रीराधा पिय हिय बसिता, श्रीराधा रति रस रसिता ॥
श्रीराधा कृष्णबल्लभा, श्रीराधा कृपा सुल्लभा ।
श्रीराधा दंभ दुल्लभा, श्रीराधा प्रेम सुल्लभा ॥
श्रीराधा कोमल अंगा, श्रीराधा मैंन तरंगा ।
श्रीराधा उरसि उमंगा, श्रीराधा केलि अभंगा ॥
श्रीराधा कुंजनिवासनि, श्रीराधा रासबिलासनि ।
श्रीराधा प्रेम प्रकासनि, श्रीराधा प्रभा प्रवासनि ॥
श्रीराधा बारिज बदनी, श्रीराधा सुखमा सदनी ।
श्रीराधा बिसद विरदनी, श्रीराधा मोहन मदनी ॥
श्रीराधा हंसा गवनी, श्रीराधा राजति रवनी ।
श्रीराधा क्रीड़ा करनी, श्रीराधा दुखहिं दवनी ॥
श्रीराधा जीवनि जी की, श्रीराधा प्यारी पीकी ।
श्रीराधा हितू सु ही की, श्रीराधा रहसि रसी की ॥
श्रीराधा लावनि ललिता, श्रीराधा अमृत सलिता ।
श्रीराधा कोमल कलिता, श्रीराधा करुना बलिता ॥
श्रीराधा चंपक बरनी, श्रीराधा चारु अभरनी ।
श्रीराधा पिय चित हरनी, श्रीराधा प्रेम वितरनी ॥
श्रीराधा कुंचित केसा, श्रीराधा सहज सुवेसा ।
श्रीराधा महा सुदेसा, श्रीराधा पिय प्रानेसा ॥
श्रीराधा बामा भामा, श्रीराधा स्यामा रामा ।
श्रीराधा नित्य सुनामा, श्रीराधा नित्य सुधामा ॥
श्रीराधा मोहन मित्रा, श्रीराधा परम पवित्रा ।
श्रीराधा चातुर चित्रा, श्रीराधा चारु चरित्रा ॥
श्रीराधा परा भक्तिदा, श्रीराधा सुद्ध मुक्तिदा ।

श्रीराधा सानुरक्तिदा, श्रीराधा गुन विरक्तिदा ॥
श्रीराधा रंग रँगीली, श्रीराधा हियें बसीली ।
श्रीराधा बार बड़ीली, श्रीराधा लाड़-लड़ीली ॥
श्रीराधा मोहनि मूरति, श्रीराधा सोहनि सूरति ।
श्रीराधा परमा पूरति, श्रीराधा नित अविछूरति ॥
श्रीराधा सुंदरि सोभा, श्रीराधा माधुरि मोभा ।
श्रीराधा आनँद गोभा, श्रीराधा लोचन लोभा ॥
श्रीराधा रूप मंजरी, श्रीराधा रंग मंजरी ।
श्रीराधा नवल मंजरी, श्रीराधा नेह मंजरी ॥
श्रीराधा सब सुख साधा, श्रीराधा गुननि अगाधा ।
श्रीराधा हरनी बाधा, श्रीराधा हरिप्रिय राधा ॥७६॥

❀ दोहा ❀

कृष्णरूप श्रीराधिका, राधे रूप श्रीस्याम ।
दरसन कों ये दोय हैं, हैं एकहि सुखधाम ॥

❀ स्तोत्र ❀

राधेकृष्ण राधेकृष्ण, कृष्ण कृष्ण राधे राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, स्याम स्याम राधे राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, नव घन गोरी राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, सुंदर जोरि राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, अद्भुतरूपा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, सहज सरूपा राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण, मोहनि मूरति राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम, सोहनि सूरति राधे ॥

राधेकृष्ण राधेकृष्ण, नवरंगभीना राधे ।

राधेस्याम राधेस्याम परम प्रवीना राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण कोमल अंगा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम सहज अभंगा राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण अति सुकुँवारा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम सुखद सुढारा राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण अति कमनीया राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम रति रमनीया राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण परमापुंजे राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम रहसि निकुंजे राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण सब सुखसारा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम परम उदारा राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण पिय प्रानेसा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम दिव्य सुबेसा राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण मनहर मित्रा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम बिसद विचित्रा राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण मंगल नामा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम दिव्यगुन धामा राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण नीरज नैंना राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम आनंदऐंना राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण नित्यबिहारा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम प्रान अधारा राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण रूप उज्यारी राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम हरिप्रिया प्यारी राधे ॥७७॥

❀ ❀ ❀

❀ दोहा ❀

श्रवन सुने स्तव सुचित श्री, राधेस्याम सुजान ।
मध्यनिसा मन मानिकैं, दीयौ सबकों सनमान ॥

❀ पद ❀

रसिकवर दियौ सबकों सनमान ।
श्रवनति सुनि निज सुजस सुचित श्रीराधेस्याम सुजान ॥
चले मनोहर मोहन मंदिर संग सखी सुखदान ।
श्रीहरिप्रिया पौढ़ाय सेज पर करन लगीं गुन गान ॥७८॥

अनुरागिनि सुष्ठुसुन्दरी मध्याभास

❀ दोहा ❀

सुख सों सेज बिराजिये, दियें भुजा अँकमाल ।
स्यामा जू के लाड़िले, लाड़-लड़ीले लाल ॥

❀ पद ❀

स्यामा जू के लाड़िले हो लाड़-लड़ीले लाल ।
लाड़-लड़ी के लाड़-लड़ीले सोहें नैंन बिसाल ॥
सुख सों सेज बिराजिये हो दिये भुजा अँकमाल ।
मोहन मदन बदन की सोभा निरखत होहिं निहाल ॥
हौं बलि-बलि या रूप पै हो परम अनूप रसाल ।
श्रीहरिप्रिया सुख संपति दंपति सदा बसो मम भाल ॥७९॥

❀ दोहा ❀

कहत बिहारीलाल बलि, सुनिय बिहारनि बैंन ।
अर्द्ध-निसा आई यहै, अब कीजै सुख सैंन ॥

❀ पद ❀

बिहारनि कीजिये सुख सैंन ।

श्रमित बदन सोहै मन मोहैं झपकौ हैं नीरज नैंन ॥

अलबेली आनंद की हो आई अधरैंन ।
(श्री)हरिप्रिया स्वामिनी हितू सहेलिन की सुख दैंन ॥८०॥

❀ दोहा ❀

तन मन मिलि बिहरत दोउ, अति उदार सुकुँवार ।
मन मोहन मन मोहनी, भीने रंग अपार ॥

❀ पद ❀

मनमोहन मनमोहनी जू भीने रंग अपार ।
मोहन मन्दिर मध्य करें दोउ सुख सों सुरत बिहार ॥
गुन निधि गोरी सेज पर जू सोये (अति) सुकुँवार ।
मनहु दबी है अचल चंचला घन स्यामल कें भार ॥
रसिक रसीली राखे जू लैं उरजनि कें आधार ।
अधर - सुधारस प्यावति पियकों प्यारी परम उदार ॥
तन मन मिलि एकत भये जू बिचि न समावत हार ।
निजदासी जहाँ निकट निहारति (श्री)हरिप्रिया सुखसार ॥८१॥

❀ दोहा ❀

अलक - लड़ैती लाड़िली, अलक लड़ौ सुकुँवार ।
अलक लड़ो मोहन महल, अलक-लड़ोइ बिहार ॥

❀ पद ❀

बिहारनि अलक - लड़ंती हो अलक - लड़ौ सुकुँवार ।
अलक - लड़े मोहन मन्दिर में अलक - लड़ोइ बिहार ॥
अलक - लड़ी उरझनि दोउन की अलक - लड़ोई प्यार ।
अलक-लड़ी (श्री)हरिप्रिया निहारति अलकलड़ौ सुखसार ॥८२॥

❀ दोहा ❀

श्रीहरिप्रिया प्रिया जु हरि, हिलिमिलि हियें सभीर ।
रहो सदा सुखनिधि मनें, सुरत समर रनधीर ॥

❀ पद ❀

कुँवर दोऊ सुरत समर रनधीर ।
गुन - मंदिर सुंदर - बर दोऊ बिहरत कुंज - कुटीर ॥
सुख सागर नागर नव नित्य उजागर अमृतसीर ।
श्रीहरिप्रिया प्रिया हरि हिय में हिलिमिलि रहो सभीर ॥८३॥

❀ दोहा ❀

सुख फूली आनँद लता, सरस महमही प्रेम ।
रसिक सहेलिन कें सदा, रस बरषहिं नित नेम ॥

❀ पद सोहिलौ ❀

रसिक सहेलिन के रस बरषे । आनँद लता हिये मधि हरषे ॥
सखी सहचरी फूली तन में । सरस सुंदरी महमहि मन में ॥
प्रेम मंजरी परम सुहाई । मन मोहिनी महा मन भाई ॥
कनक तनी रति बनी जोबनी । चिमतकारिनी सुभ सुदर्सनी ॥
एक एक तें अति अलबेली । लाड़भरी गुन गरब गहेली ॥
एक बरन तन बैस किसोरी । एक रूप रस माँहि झकोरी ॥
झमकि झमकि टहलें अनुसरहीं । जो जो श्रीहरिप्रिया आज्ञा करहीं ॥
श्री रँगदेवी के जुथ महियाँ । कलकंठी नववासा पहियाँ ॥
मंगल आरति सैंन प्रजंता । जुगल चंद्र की केलि अनंता ॥
सुचित सुचीतन रंग बढ़ावें । रंग रँगीली के मन भावें ॥
रंग रली के रंग रचावें । मंगल बिमली खेल मचावें ॥
चरन चरन पर परन एक गति । कर पर करतारनि की जति अति ॥
मगन भई तन सुधि न सँभारें । आनँद सिंधु बढ़्यौ जु[1] अपारें ॥
यह सुख मुख कछु कहत न आवै । बिन श्रीहितू कृपा को पावै ॥
श्रीहरिप्रिया सकल सुख सार । लाल-लाडिली नित्य बिहार ॥८४॥

रा० १ है ।

❀ दोहा ❀

रसिक रंग रेली सबै, रसिक सहेली गाय ।
आवैं निज निज कुंज में, लालैं लाड़-लड़ाय ॥
इहि बिधि सेवा-सुख समै, मंगल सैंन प्रज्यंत ।
ध्यावैं सो पावैं सदा, परम तंत को तंत ॥

❀ कुण्डलिया ❀

हीनश्रद्धा नास्तिक हरि-धर्म बहिर्मुख होइ ।
जिनसों यह जस महारस कहो सुनौ जिनि कोई ॥
कहौ सुनौ जिनि कोइ बिना इक अननि उपासिक ।
ताहू में यह भाव सखी वृन्दावन वासिक ॥
श्रीहरिप्रिया पद पद्म को मन मधुकर जिहिं कीन ।
सोई सब तैं श्रेष्ठ है और सबै जग हीन ॥

❀ दोहा ❀

षट अरु तीस श्लोक सुनि, अरु पुनि दोहा पांच ।
चौरासी आभास जुत, पद द्वै दोहा सांच ॥
इक कुंडलिया ए सबै, अट्ठाइस सत एक ।
अब अनुरागनि प्रतिजु पद, कहत सु बरनि विवेक ॥

❀ कवित्त छप्पय ❀

च्यारि सुभरवा माँहि दोय दिविगंधा में कहि ।
रत्नकला में तीन विश्व-आभा द्वादश चहि ॥
नव बिलास - आवली सप्त आनंदा सुनि ।
दस सुरंग - अंगाजु गौर - मुखया में षट पुनि ॥
षटहु केलिकौमुदी में कर्नकान्ति षट जानिये ।
द्वै अलबेली - केलि में रहे जु सो उनमानिये ॥

विचित्र - सोभा में च्यार एक कंद्रप - कामा में ।
खंजनाक्षी षट कहे षटहु सुंदरि - सुष्ठा में ॥
चौरासी पद इहि प्रकार सेवा-सुख लहिये ।
पंद्रह अनुरागनी माहिं संपूरन सहि ये ॥

❀ दोहा ❀

अष्टकाल सेवा जु सुख, अहल महल की बात ।
कछू अलभि ताहि न रहै, साधहि सो साछ्यात ॥

इति श्री पद विलास निकुंज रहस्य श्रीमहादिव्य महाराजेश्वर
प्रवर परमहंसवंसाचार्य्य श्रीमद्दहरिव्यासदेवजू कृता
श्रीमहावाणी अष्टकाल सेवासुख संपूर्णम् ।

सेवा अधिकार

॥ दोहा ॥

बिधि निषेध आदिक जिते, कर्म-धर्म तजि तास ।
प्रभु कें आश्रय आवहीं, सो कहिये निज दास ॥

॥ पद ॥

जो कोउ प्रभु कें आश्रय आवैं । सो अन्याश्रय सब छिटकावैं ॥
बिधि - निषेध कें जे जे धर्म । तिनकों त्यागि रहें निष्कर्म ॥
झूठ क्रोध निन्दा तजि देंहीं । बिन प्रसाद मुख और न लेंहीं ॥
सब जीवनि पर करुना राखैं । कबहुँ कठोर बच्चन नहिं भाखैं ॥
मन माधुर्य - रस माहि समोवैं । घरी पहर पल वृथा न खोवैं ॥
सतगुरु के मारग पगु - धारैं । हरि सतगुरु बिचि भेद न पारैं ॥
ए द्वादस - लच्छिन अवगाहैं । जे जन परा परम - पद चाहैं ॥
जाकें दस पैड़ी अति दृढि हैं । बिन अधिकार कौन तहाँ चढि हैं ॥
पहले रसिक जनन कों सेवैं । दूजी दया हिये धरि लेवैं ॥
तीजी धर्म सुनिष्ठा गुनि हैं । चौथी कथा अतृप्त ह्वै सुनि हैं ॥
पंचमि पद पंकज अनुरागैं । षष्टी रूप अधिकता पागैं ॥
सप्तमि प्रेम हिये विरधावैं । अष्टमि रूप ध्यान गुन गावैं ॥
नवमी दृढ़ता निश्चैं गहिबैं । दसमी रसकी सरिता वहिबैं ॥
या अनुक्रम करि जे अनुसरहीं । सनै - सनै जग ते निरबरहीं ॥
परमधाम परिकर मधि बसहीं । श्रीहरिप्रिया हितू सँग लसहीं ॥

श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज (श्रीमहावाणी)